



एफसीआरए विधेयक जेपीसी भेजने का प्रस्ताव लोकसभा में पास

इस प्रस्तावित संयुक्त समिति में लोकसभा से 21 और राज्यसभा से 10 सदस्य शामिल होंगे।

एजेंसी नई दिल्ली । नई दिल्ली । केंद्र सरकार ने विदेशी अंशदान (विनियमन) संशोधन विधेयक (एफसीआरए), 2026 को संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) भेजने का निर्णय लिया है। बुधवार को इसका प्रस्ताव लोकसभा में रखा गया, जिसे सदन ने ध्वनिमत से पास किया। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने बुधवार को लोकसभा में केंद्रीय गृह मंत्री की ओर से विदेशी अंशदान (विनियमन) संशोधन विधेयक (एफसीआरए), 2026 को जेपीसी को सौंपने का यह प्रस्ताव रखा। इस प्रस्तावित संयुक्त समिति में लोकसभा से 21 और राज्यसभा से 10 सदस्य शामिल होंगे। समिति को विधेयक की जांच करने और शीतकालीन सत्र 2026 के पहले सप्ताह के आखिरी दिन तक अपनी रिपोर्ट सौंपने का काम सौंपा गया है। हालांकि, विपक्ष ने सरकार के इस प्रस्ताव का विरोध किया। कांग्रेस सांसद वेणुगोपाल ने कहा, 'सरकार



रिजिजू बोले- 'ये अल्पसंख्यकों के खिलाफ नहीं'

विपक्ष के आरोपों पर जवाब देते हुए केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा, 'कैसी वेणुगोपाल ने गलत बोला है। कई दिनों से कांग्रेस और अन्य दलों ने मांग की कि एफसीआरए संशोधन विधेयक को जेपीसी में भेजा जाए। जब इस महत्वपूर्ण बिल को जेपीसी में भेज रहे हैं तो विपक्ष को इस पर आपत्ति हो रही है।' रिजिजू ने कहा कि कैसी वेणुगोपाल या अन्य सदस्य को इस बिल में आपत्तिजनक कुछ बिंदु लगने हैं तो जेपीसी में मत रख सकते हैं। इसमें उन्हें पर्याप्त समय मिलेगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा, 'इस विधेयक से किसी भी अल्पसंख्यक वर्ग को टारगेट नहीं किया जा रहा है। पूरे देश को सुरक्षित रखने के लिए नियम बना रहे हैं।'

अल्पसंख्यकों और एनजीओ को निशाना बनाने की कोशिश कर रही है। हमारी मांग है कि सरकार इस बिल को वापस ले।'

सपा सांसदों ने FCRA बिल को JPC के पास भेजने का किया समर्थन

नई दिल्ली । विपक्षी सांसदों ने बुधवार को विदेशी अंशदान (विनियमन) अधिनियम (एफसीआरए) को संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के पास भेजने का समर्थन किया है। उन्होंने सरकार से सदन में राम मंदिर चढ़ावा मामले पर भी जवाब देने की मांग की। समाजवादी पार्टी की सांसद डिंपल यादव ने भी एफसीआरए विधेयक को जेपीसी के पास भेजे जाने का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि यदि इसे जेपीसी में भेजा जा रहा है तो यह अच्छी बात है, क्योंकि विपक्ष पहले ही आशंका जता चुका है कि संस्थाओं और उनके जमीनी स्तर पर काम करने के तरीके को लेकर किस तरह हेरफेर हो सकता है।

टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन का इस्तीफा

कहा-पिछले एक दशक में टाटा संस का नेतृत्व करना एक बड़ा सम्मान

एजेंसी नई दिल्ली । टाटा संस के चेयरमैन एन. चंद्रशेखरन ने आज 12 अगस्त को इस्तीफा दे दिया है। उनका इस्तीफा 18 अगस्त को होने वाली टाटा संस की एजीएम से ठीक पहले आया है। हालांकि, वे फरवरी 2027 तक पद पर बने रहेंगे। चंद्रशेखरन के तीसरे कार्यकाल को लेकर टाटा ट्रस्ट्स के साथ सहमति नहीं बन पाई थी। नए कारोबारों में भारी निवेश, उनके प्रदर्शन और टाटा संस के भविष्य को लेकर मतभेद इस फैसले की बड़ी वजह बने।



चंद्रशेखरन ने इस्तीफा देते हुए क्या कहा?

चंद्रशेखरन ने कहा कि, 'टाटा संस के चेयरमैन के रूप में मेरा मौजूदा कार्यकाल 20 फरवरी 2027 को खत्म हो रहा है। सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट और सर रतन टाटा ट्रस्ट ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करके मेरे अगले 5 साल के कार्यकाल के विस्तार की सिफारिश की थी। इसे टाटा संस की नॉमिनेशन एंड रेमूनरेशन कमेटी और बोर्ड ने दर्ज किया था और आगे बढ़ाने की सिफारिश की थी। इसके बाद, यह प्रस्ताव 24 फरवरी 2026 को टाटा संस बोर्ड के सामने रखा गया था। हालांकि, यह प्रस्ताव आगे नहीं बढ़ सका क्योंकि बोर्ड के एक सदस्य ने इसका समर्थन नहीं किया। सर्वसम्मति समर्थन न मिलने की वजह से मैंने इस फैसले को टालने का विकल्प चुना। उस बोर्ड मीटिंग को हुए 6 महीने बीत चुके हैं और आज तक कोई फैसला नहीं हो पाया है। टाटा संस एक बहुत बड़ा संस्थान है और कई बड़े रणनीतिक प्रोजेक्ट्स अभी अहम मोड़ पर हैं।

एजेंसी नई दिल्ली । लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बुधवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर निशाना साधते हुए छात्रों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई को लेकर केंद्र सरकार से जवाब मांगा है। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने बुधवार को संसद परिसर में पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का बयान या 'लेक्चर' सुनने में कोई दिलचस्पी नहीं है। उनकी प्राथमिकता देश की युवा पीढ़ी से जुड़े उन सवालों का जवाब पाना है, जिनका संबंध छात्रों पर हुई कथित हिंसा से है। राहुल गांधी ने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के साथ उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस की है और विपक्ष की अन्य पार्टियों ने भी अपना रुख स्पष्ट किया है। उन्होंने कहा कि विपक्ष जानना चाहता है कि दिल्ली में प्रदर्शन कर रहे छात्रों पर गोली चलाने का आदेश किसने दिया, किसके आदेश से छात्रों पर लाठीचार्ज हुआ और एक छात्र की आंख की रोशनी जाने की घटना के लिए कौन जिम्मेदार है। उन्होंने गृह मंत्रालय की भूमिका पर सवाल उठाते हुए कहा कि



छात्रों के खिलाफ कार्रवाई का आदेश गृह मंत्रालय के स्तर से लागू किया गया था। राहुल गांधी ने सीधे अमित शाह से सवाल किया कि क्या उन्होंने छात्रों पर गोली चलाने का आदेश दिया था। उन्होंने कहा कि यदि ऐसा आदेश गृह मंत्री ने दिया था तो उन्हें इस्तीफा देना चाहिए क्योंकि तब वे इस कार्रवाई के लिए जिम्मेदार होंगे।

अखिलेश का अमित शाह पर पलटवार, बोले- 'देश भाषण सुनने के मूड में नहीं'

लखनऊ । केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के संसद में जारी गतिरोध को लेकर दिए बयान पर समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पलटवार किया है। अखिलेश ने कहा कि संसद में जवाब देने के लिए सरकार जिस समय सीमा की बात कर रही है, वह अपने आप में अलोकतांत्रिक है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार वास्तव में किसी सवाल का जवाब देना ही नहीं चाहती और संसद के मौजूदा सत्र को जल्द समाप्त करने के लिए उतावली है। दरअसल गृह मंत्री अमित शाह ने संसद में जारी गतिरोध को लेकर कहा था कि सरकार हर मुद्दे पर चर्चा के लिए तैयार है लेकिन विपक्ष को सदन चलने देना चाहिए। इसी पर प्रतिक्रिया देते हुए सपा मुखिया अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म 'एक्स' पर पोस्ट कर सरकार की मंशा पर सवाल उठाए। अखिलेश यादव ने 'एक्स' पर लिखा कि संसद में जवाब देने के लिए सरकार जो समय-सीमा तय करना चाहती है, वो स्वयं में अलोकतांत्रिक है। दरअसल ये जवाब नहीं होगा, थोथा बयान होगा। उन्होंने कहा कि सच तो ये है कि भाजपा चाह ही नहीं रही है कि कोई जवाब दिया जाए।

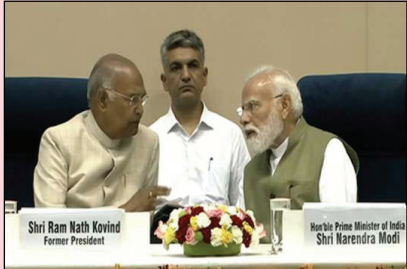
'शॉर्टकट विल कट यू शॉर्ट', प्रधानमंत्री मोदी का संदेश- 'शॉर्टकट के रास्ते से निकलें बाहर नौजवान'

सोशल मीडिया में इंपलूएंसर आपको खींचकर कहीं से कहीं ले जाते हैं।

एजेंसी नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की युवा पीढ़ी 'शॉर्टकट' के रास्ते से बाहर निकलने का आग्रह किया है। पीएम मोदी ने युवा पीढ़ी से पूर्व राष्ट्रपति की आत्मकथा पढ़ने और उनके जीवन के अनुभवों व संघर्षों से सीखने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, 'मैं युवा पीढ़ी से खासकर आग्रह करता हूँ। रील का जमाना है। सोशल मीडिया में इंपलूएंसर आपको खींचकर कहीं से कहीं ले जाते हैं। इस शॉर्टकट के युग में भी एक बात जरूर याद रखें। रेलवे स्टेशनों पर कुछ लोगों को पटरी पर कूदकर जाने की आदत होती है। वह ब्रिज से होकर नहीं जाते हैं, लेकिन वहां (रेलवे स्टेशन) पर लिखा होता है- 'शॉर्टकट

पीएम ने रामनाथ कोविंद की आत्मकथा 'ट्रायम्फ ऑफ द इंडियन रिपब्लिक: माई लाइफ, माई स्ट्रगल्स' का विमोचन किया।

'रामनाथ कोविंद की आत्मकथा लोकतंत्र और समाज के लिए धरोहर बनेगी', पीएम मोदी ने की जमकर तारीफ



अपने संबोधन में उन्होंने कहा, 'आज हमें रामनाथ कोविंद की आत्मकथा के विमोचन का अवसर मिला है। मुझे खुशी है कि इस कार्यक्रम का हिस्सा बनने का सौभाग्य मिला है। रामनाथ कोविंद से बहुत लंबा परिचय रहा है। उन्हें करीब से जानने का भी अवसर मिला है। राष्ट्रपति के रूप में उनके मार्गदर्शन के साथ-साथ उनका मेरे प्रति विशेष स्नेह और आत्मीयता, यह मेरी बहुत बड़ी पूंजी रही है।'

विल कट यू शॉर्ट।' पीएम मोदी ने कहा कि अगर शॉर्टकट के रास्ते से बाहर निकलना है तो मैं नौजवानों से कहूंगा कि

आपको जिसकी भी आत्मकथा पसंद हो, कृपया उसे पढ़ें।

एजेंसी नई दिल्ली । इलाहाबाद हाईकोर्ट के पूर्व जस्टिस यशवंत वर्मा से जुड़े केश कांड में जांच समिति की रिपोर्ट से बड़ा खुलासा हुआ है। लोकसभा अध्यक्ष की ओर से गठित जांच समिति ने उनके खिलाफ लगाए गए तीनों आरोपों को सही माना है। रिपोर्ट में उन्हें दोषी करार दिया गया है। हालांकि, रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि इस मामले में किसी प्रकार की साजिश के संकेत नहीं मिले हैं। मामला दिल्ली में जस्टिस वर्मा के आधिकारिक आवास से नकदी मिलने और उसके बाद शुरू हुई जांच से जुड़ा है। जांच समिति ने नकदी की मौजूदगी, उससे जुड़े साक्ष्यों के रखरखाव और जस्टिस वर्मा की ओर से दिए गए स्पष्टीकरण को लेकर गंभीर सवाल उठाए हैं।

पद प्रतिष्ठा दोनों ले गये अधजले नोट



क्या घर के स्टोररूम में मिले थे 500 रुपये के नोट?

समिति ने अपने निष्कर्ष में जज को दोषी माना है। रिपोर्ट के मुताबिक, नई दिल्ली के 30, तुगलक क्रिसेंट स्थित आधिकारिक आवास के स्टोररूम में पर्याप्त संख्या में 500 रुपये मूल्यवर्ग के नोट मिले थे। समिति ने कहा कि जज यह संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं कर सके कि ये नोट वहां कैसे पहुंचे, उनका स्रोत क्या था और उनका स्वाभिमित किसका था?

6 राज्यों में भारी बारिश से जनजीवन बेहाल

भोपाल में 8.57 इंच बारिश । हाड़ौती में 12 इंच बरसा पानी

बिहार में बिजली गिरने से 9 मौतें

एजेंसी नई दिल्ली। देश के मध्य और पूर्वी हिस्से में मानसून एक्टिव है। मध्यप्रदेश, राजस्थान के कई इलाकों में लगातार तीसरे दिन भारी बारिश से हालात खराब हैं। इसकी वजह तीन मानसूनी सिस्टम हैं। इनके कारण अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से बड़ी मात्रा में नमी आ रही है। भोपाल में बुधवार को लगातार तीसरे दिन स्कूलों में छुट्टी है। यहां दो दिनों में 8.57 इंच बारिश हुई। करीब 200 मकानों में छई फीट तक पानी भर गया। **राजस्थान** : प्रदेश के हाड़ौती अंचल (कोटा, बारंग, बूंदी और झालावाड़) में पिछले 24 घंटों में 12 इंच तक भारी बारिश हुई है। मौसम विभाग ने आज राज्य के 6 जिलों में अर्रंज और 17 जिलों में येलो अलर्ट जारी किया है। **बिहार** : राज्य के विभिन्न जिलों



और कई लोग झुलस गए।

हिमाचल प्रदेश : कुल्लू के NH-305 पर चल्ती कार पर चट्टानें गिरने से दो लोग घायल हो गए। राज्य में चंडीगढ़-मनाली फोरलेन समेत 259 सड़कें बंद हैं और 161 बिजली ट्रांसफॉर्मर ठप पड़े हैं।

उत्तर प्रदेश व असम : यूपी के बिजनौर और फर्रुखाबाद में गंगा नदी का पानी सड़कों पर

मौसम का पूर्वानुमान
मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, बंगाल की खाड़ी में एक नया कम दबाव का क्षेत्र बन रहा है, जिसके प्रभाव से 15 अगस्त तक मध्य भारत, राजस्थान और दक्षिण बंगाल के जिलों में भारी से अत्यंत भारी बारिश का दौर जारी रहने का अनुमान है। देश के 741 जिलों में से लगभग 46 प्रतिशत (338 जिलों) में अब तक सामान्य से कम बारिश दर्ज की गई है।

'लोकसभा की सीटें 543 पर स्थिर कर देनी चाहिए'

अन्यथा यह चीन की संसद जैसी हो जाएगी: चिदंबरम

एजेंसी नई दिल्ली । कांग्रेस सांसद पी. चिदंबरम ने बुधवार को कहा कि लोकसभा की सीटों को 543 पर स्थिर कर देना चाहिए, अन्यथा यह चीन की संसद की तरह हो जाएगी। कांग्रेस सांसद पी. चिदंबरम ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा, 'लोकसभा को 543 पर फ्रीज किया जाना चाहिए। वरना यह चीन की संसद जैसी हो जाएगी। यह सदन नहीं, एक सार्वजनिक सभा बन जाएगी।' उन्होंने आगे कहा कि तमिलनाडु का मौजूदा हिस्सा 7.18 फीसदी है। इसलिए तमिलनाडु समेत सभी दक्षिण भारतीय राज्यों का कोटा भी फ्रीज किया जाना चाहिए। उन्हें परिवार नियोजन लागू करने की सजा नहीं दी जा सकती।' उन्होंने झारखंड में 'विधानसभा घेराव' मार्च के दौरान छात्रों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, 'झारखंड मुद्दे पर राहुल गांधी और मेरे समेत कई अन्य लोगों ने पुलिस कार्रवाई की निंदा की है। मैंने कहा था कि पुलिस और उनके राजनीतिक आकाओं पर शर्म आती है। ऐसा नहीं होना चाहिए था, लेकिन ऐसा हुआ है, इसलिए हम इसकी निंदा करते हैं।'



'परिसीमन विधेयक की कोई आवश्यकता नहीं है'

कांग्रेस सांसद पी. चिदंबरम ने आगे कहा, 'उस परिसीमन विधेयक की कोई आवश्यकता नहीं है। राज्यों के मौजूदा प्रतिनिधित्व को कम नहीं किया जाना चाहिए। हमें क्यों दंडित किया जा रहा है? उन राज्यों को क्यों दंडित किया जा रहा है जिन्होंने ईमानदारी और सर्वसम्मति से परिवार नियोजन कार्यक्रम को लागू किया है?'

मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा गृहमंत्री पेश करे बिल

जेपी नड्डा बोले- विपक्ष सदन को कर रहा गुमराह

एजेंसी नई दिल्ली । सहकारिता राज्य मंत्री मुरलीधर मोहोले ने बुधवार को राज्यसभा में राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम अधिनियम, 1962 में संशोधन करने वाले विधेयक को पेश किया। हालांकि, इस पर विपक्ष ने ऐतराज जताया। विपक्ष का कहना था कि कार्य सूची के मुताबिक, यह विधेयक गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह को सदन में पेश करना चाहिए था। वहीं, सत्ता पक्ष ने विपक्ष की इस बात को खारिज किया। सत्ता पक्ष का कहना है कि विपक्ष केवल सदन को गुमराह करने की कोशिश कर रहा है। संशोधन विधेयक पेश करते हुए सहकारिता राज्य मंत्री मुरलीधर मोहोले ने कहा कि वह केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह की ओर से प्रस्ताव रखते हैं कि राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम अधिनियम, 1962 में संशोधन करने वाले विधेयक को, जैसा कि लोकसभा से पारित हुआ है, विचार और पारित करने के लिए लिया जाए। मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि अगर कोई मंत्री किसी आवश्यक कार्य के कारण सदन में उपस्थित नहीं हो पाता है तो ऐसे में मंत्री

का कोई साथी विधेयक पेश कर सकता है। ये सब हम जानते हैं। उन्होंने कहा कि मैं यही चाहता हूँ कि जिनके नाम से यह विधेयक है, किसी कारण से अगर वे अनुपस्थित हैं



तो कोई बात नहीं, लेकिन हर ऐसा रोज नहीं होना चाहिए।

राज्यसभा के नेता सदन जेपी नड्डा ने कहा -

विपक्ष के नेता सदन को गुमराह कर रहे हैं। नड्डा ने कहा कि सरकार ने स्पष्ट रूप से कहा है कि हम हर चर्चा करने के लिए तैयार हैं। नड्डा ने विपक्ष पर आरोप लगाते हुए कहा कि चर्चा से तो उल्टा आप भाग रहे हैं।

असामाजिक हो रहे सोशल मीडिया का नियमन जरूरी



पवन माकन
ग्रुप एडिटर, महानगर मेट्रो

सोशल मीडिया को लोकतंत्र के बड़े मंच के रूप में 17 दिसंबर 2010 को ट्यूनिशिया के सिटी बौजिज शहर में फलों का ठेला लगाने वाले मोहम्मद बोआजीजी की आत्महत्या के बाद हुए उबाल के बाद देखा जाने लगा। म्युनिसिपल कर्मचारियों की सख्ती के चलते शुब्ब बोआजीजी ने खुद पर पेट्रोल डालकर आग लगा ली।

दिल्ली में बीस जुलाई को काकरोच जनता पार्टी के संसद मार्च के दौरान हुई हिंसा और 23 जुलाई को प्रधानमंत्री मोदी के जैन जी के संबोधन की वीडियो फेसबुक और इंस्टाग्राम से हटाए जाने के बाद सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म बहुत चर्चा में हैं। चर्चा से ज्यादा उनकी भूमिका कहीं ज्यादा विमर्श के केंद्र में है। इसमें दो राय नहीं कि दुनियाभर में जो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ज्यादा प्रचलन में हैं, उनमें से ज्यादातर विदेशी हैं। जाहिर है कि वे उन जगहों के कानूनों और सांस्कृतिक परंपराओं से ज्यादा संचालित हैं, जहां उनके मुख्यालय हैं। इसलिए अपने व्यापक हितों के लिए वे अपने प्रचलन वाले देशों की परंपराओं और संस्कृतियों को सवालों के घेरे में लाने, उसका उपहास उड़ाने और उन्हें तार-तार करने वाला अलगोरिदम उन्होंने विकसित कर रखा है। जिसका खामियाजा तीसरी दुनिया के देश और वहां की सांस्कृतिक परंपराएं उठा रही हैं।

सोशल मीडिया को लोकतंत्र के बड़े मंच के रूप में 17 दिसंबर 2010 को ट्यूनिशिया के सिटी बौजिज शहर में फलों का ठेला लगाने वाले मोहम्मद बोआजीजी की आत्महत्या के बाद हुए उबाल के बाद देखा जाने लगा। म्युनिसिपल कर्मचारियों की सख्ती के चलते शुब्ब बोआजीजी ने खुद पर पेट्रोल डालकर आग लगा ली। किसी ने इस घटना को सोशल मीडिया पर डाल दिया। सोशल मीडिया के तत्कालीन अलगोरिदम ने इस घटना को इस रूप में प्रस्तुत किया कि समूचे अरब जगत में उबाल आ गया। नागरिक अधिकारों की स्थापना और लोकतंत्र की बहाली की मांग को लेकर अरब देशों की जनता सड़कों पर उतर आई। इसका ही नतीजा मिस्त्र की राजधानी काहिरा के तहरीर चौक पर दिखा। जहां महीनों तक लोग जमे रहे और वहां के राष्ट्रपति को इस्तीफा देना पड़ा। यह आग सीरिया, यमन और लीबिया तक जा पहुंची। वहां के पारंपरिक शासकों के खिलाफ लोगों का दबा हुआ गुस्सा निकला और कई जगह सत्ताएं बदल गईं। भारत में भी इसके ही कुछ महीनों बाद अन्ना हजारे को आगे रखकर एक आंदोलन छेड़ा गया। जिसकी परिणति आम आदमी पार्टी के रूप में हुई और वह दिल्ली की सत्ता पर काबिज हुई। फिर पंजाब में भी उसने पैठ बना ली।

इन घटनाओं को याद करना इसलिए जरूरी है कि इन सबके पीछे सोशल मीडिया के जरिए त्वरित गति से फैलाई गई सूचनाओं का हाथ सबसे ज्यादा रहा। तब सोशल



मीडिया को लोकतंत्र के लिए जरूरी बताया गया। सोशल मीडिया के बारे में कहा गया कि लोकतंत्र में सबकी आवाज पहुंचाने और उन्हें मौका देने का यह बड़ा माध्यम है। इसे लोकतंत्र के वाजिब और जरूरी औजार के रूप में भी मान्यता मिली। लेकिन बीतेते वक्त के साथ पता चल रहा है कि जिसे हम सोशल मीडिया कहते हैं, वह लोकतंत्र के लिए जितना जरूरी है, उससे कहीं ज्यादा अनसोशल यानी असामाजिक भी है। यह ठीक है कि सोशल मीडिया के जरिए व्यवस्था की अंधी सुरंग में खो रही आवाजों को मौका मिलता है। लेकिन यह उतना ही सच है कि इस माध्यम ने लोगों की नजर का पानी उतार दिया है। लोग अब लिहाज करना भूल गए हैं। सोशल मीडिया पर अगर किसी की बात पसंद नहीं आती तो उसे खुलेआम गालियां दी जा सकती हैं। उसके चरित्र पर आक्षेप लगाया जा सकता है। उसका चरित्र हनन किया जा सकता है। चाहे वह व्यक्ति सामाजिक जीवन में कितना ही प्रतिष्ठित क्यों न हो, उसकी उम्र चाहे जितनी भी बड़ी क्यों न हो।

सोशल मीडिया मंचों ने अपना अलगोरिदम भी ऐसा विकसित किया है, जो अच्छी बातों, सामाजिक चिंतन और बेहतर कल की बातों को ज्यादा तवज्जो नहीं देखा। एक तरह से कहें तो वह इसकी अनदेखी ही करता है। लेकिन

जैसे ही किसी को कोई गाली देता है, किसी के चरित्र का बेवजह ही हनन करता है, किसी का घटिया कार्टून बनाता है, सोशल मीडिया का अलगोरिदम उसे फैलाने में द्रुत गति से जुट जाता है। सोशल मीडिया ने अब तक पदों के पीछे रही नंगई को भी उजागर कर दिया है। आज रील्स के चक्कर में अधनगे और कई बार करीब-करीब नग्न फोटोग्राफ और वीडियो तक जारी किए जा रहे हैं। भले ही अपने परिवारों में महिलाएँ और युवतियाँ सलीके से रहती हों, लेकिन सोशल मीडिया पर प्रसिद्धि पाने और उसी के जरिए कुछ कमाने के चक्कर में अपने शील और अपनी लज्जा को भी बेपर्दा कर रही हैं। सोशल मीडिया कितना असमाजिक हो चुका है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उसका अलगोरिदम अश्लीलता को बढ़ावा देता है, लेकिन शील और लज्जा की बात को अपने मंच के किसी कोने में डाल देता है। कह सकते हैं कि वर्चुअल स्पेस के किसी अंधेरे कोने में उसे गुम कर देता है।

तीन साल पहले यू। रिसर्च सेंटर ने 19 विकसित अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों में सोशल मीडिया को लेकर एक शोध किया था। उसके मुताबिक, आम नागरिकों की नजर में सोशल मीडिया राजनीतिक जीवन के लिए रचनात्मक और विनाशकारी दोनों है। इस अध्ययन में शामिल देशों में,

अंगदान की संस्कृति ही मानवता को नई दिशा दे सकती है

महान त्याग की परंपरा बहुत पुरानी है। महर्षि दधीचि की कथा इसका सबसे प्रभावशाली उदाहरण है। पौराणिक परंपरा के अनुसार जब देवताओं को असुरों से संघर्ष के लिए ऐसे अस्त्र की आवश्यकता हुई जिसे दधीचि की अस्थियों से बनाया जा सके, तब महर्षि दधीचि ने लोककल्याण के लिए अपना शरीर ही त्याग दिया। उनकी अस्थियों से वज्र बनाया गया और उससे जनकल्याण की रक्षा हुई। यह कथा आधुनिक अर्थों में अंगदान की चिकित्सकीय प्रक्रिया नहीं है, लेकिन अपने शरीर को भी समाज और सृष्टि के कल्याण के लिए समर्पित कर देने की भारतीय त्याग-चेतना का अत्यंत शक्तिशाली प्रतीक अवश्य है। भारत के राष्ट्रपति सचिवालय ने भी अंग एवं देहदान की भारतीय परंपरा को समझाते हुए महर्षि दधीचि के इस प्रसंग का उल्लेख किया है। हमारी परंपरा में राजा शिवि की कथा भी त्याग और जीव-दया की अद्भुत मिसाल है। एक कबूतर की रक्षा के लिए उन्होंने अपने शरीर का मांस तक देने की तत्परता दिखाई। चाहे ये प्रसंग धार्मिक आख्यान हों, लेकिन इनके भीतर छिपा संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है-अपने जीवन और शरीर को केवल अपनी निजी संपत्ति न समझना, बल्कि उसे व्यापक जीवन के कल्याण से जोड़ना। जैन दर्शन का सूत्र ह्यपरस्परिग्रहो जीवानाम्ह भी यही बताता है कि जीव एक-दूसरे के उपकार के लिए हैं। अंगदान इस विचार का आधुनिक वैज्ञानिक रूप कहा जा सकता है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने इस मानवीय भावना को वास्तविक जीवन बचाने की शक्ति प्रदान कर दी है। वर्ष 1954 में दुनिया का पहला सफल मानव किडनी प्रत्यारोपण हुआ। रोनाल्ड ली हेरिक ने अपनी एक किडनी अपने जुड़वां भाई रिचर्ड को दान की थी। यह घटना चिकित्सा इतिहास में एक ऐसी क्रांति की शुरुआत बनी, जिसने आगे चलकर अंग प्रत्यारोपण का लाखों लोगों के लिए जीवन की आशा बना दिया। इसके बाद 1967 में मानव हृदय प्रत्यारोपण की

सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि चिकित्सा विज्ञान मनुष्य की मृत्यु और जीवन के बीच खड़ी कई दीवारों को तोड़ सकता है। भारत ने भी इस क्षेत्र में उल्लेखनीय यात्रा की है। देश में पहला सफल किडनी प्रत्यारोपण 1 दिसंबर 1971 को चेन्नई के क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर में हुआ था। उस समय शायद किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि एक दिन भारत में हजारों लोगों के लिए अंग प्रत्यारोपण जीवन का नया द्वार बनेगा। आज चिकित्सा तकनीक इतनी आगे बढ़ चुकी है कि किडनी, लिवर, हृदय, फेफड़े, अग्न्याशय और आत जैसे अंगों के साथ कार्निजा, त्वचा, हड्डी और हृदय वाल्व जैसे ऊतकों का भी प्रत्यारोपण संभव है।

लेकिन विज्ञान की क्षमता जितनी बढ़ी है, हमारी सामाजिक चेतना उस गति से नहीं बढ़ पाई। यही सबसे बड़ी चुनौती है। भारत में आज भी प्रत्यारोपण की आवश्यकता और उपलब्ध अंगों के बीच बड़ा अंतर है। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि 2024 में देश में अंग प्रत्यारोपण की गतिविधि व्यापक रही, लेकिन मृतक दाताओं की संख्या अभी भी आवश्यकता की तुलना में बहुत कम है। इसका अर्थ साफ है-हमारे अस्पतालों में तकनीकी हैं, डॉक्टर हैं, सर्जरी की क्षमता है, लेकिन जीवन बचाने के लिए पर्याप्त अंग नहीं हैं। इस स्थिति को बदलने के लिए हमें अंगदान को मृत्यु की चर्चा नहीं, जीवन की चर्चा बनाना होगा। परिवारों में इस विषय पर समय रहते बातचीत होनी चाहिए। स्कूलों, विश्वविद्यालयों, धार्मिक संस्थाओं, सामाजिक संगठनों और मीडिया को मिलकर ऐसी वातावरण-निर्मिति करनी होगी जिसमें अंगदान सुनते ही भय नहीं, बल्कि करुणा और जीवन बचाने का भाव पैदा हो। आज भी अनेक लोग सोचते हैं कि मृत्यु के बाद शरीर को क्षति पहुंचाना धर्म के विरुद्ध है। कुछ लोगों को अगले जन्म की चिंता होती है, कुछ को शरीर के साथ होने वाली चिकित्सा प्रक्रिया का भय होता है और कुछ परिवार अंतिम समय में

मानसिक रूप से इतने टूट जाते हैं कि अंगदान का निर्णय नहीं ले पाते। इन भ्रमों का समाधान टक्कराव से नहीं, संवाद, संवेदना और वैज्ञानिक जानकारी से होगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह समझनी होगी कि अंगदान किसी पर थोपा जाने वाला धार्मिक या सामाजिक कर्तव्य नहीं है। यह एक स्वैच्छिक, नैतिक और मानवीय निर्णय है, जिसे व्यक्ति को विश्वसनीय चिकित्सा एवं कानूनी जानकारी के आधार पर लेना चाहिए। लेकिन यदि कोई व्यक्ति स्वेच्छा से यह संकल्प करता है कि मृत्यु के बाद उसके उपयोगी अंग किसी जरूरतमंद को मिलें, तो वह अपने जीवन की अंतिम घड़ी को भी मानवता के उत्सव में बदल सकता है। भारत में अंगदान की प्रेरक घटनाएँ लगातार सामने आ रही हैं। हाल ही में नागपुर में 52 वर्षीय शिक्षक कोडंबा दत्तात्रेय मडावी मृतक अंगदान करने वाले 200वें दाता बने, उनके अंगों से तीन लोगों को नया जीवन मिला। ऐसी घटनाएँ हमें बताती हैं कि अंगदान कोई दूर की आदर्शवादी कल्पना नहीं, बल्कि हमारे अस्सपास घटने वाली वास्तविक जीवन-बचाने वाली प्रक्रिया है। दिल्ली में 70 वर्षीय मृत महिला के गुर्दे का सफल उपयोग कर एक 56 वर्षीय महिला को जीवन की नई उम्मीद मिली-यह घटना यह भी बताती है कि केवल उम्र के आधार पर किसी संभावित दाता के अंगों को अनुपयोगी मान लेना उचित नहीं है, अंतिम निर्णय चिकित्सा स्थिति पर निर्भर करता है। भारत के कुछ राज्यों ने इस दिशा में उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। तेलंगाना में 2024 में मृतक अंगदान की दर राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक रही और उसके हज्जीवदानह्द कार्यक्रम के माध्यम से हजारों प्रत्यारोपण संभव हुए। तमिलनाडु में भी मृतक अंगदान की व्यवस्था ने अनेक परिवारों को प्रेरित किया हैय 2026 में एक परिवार ने भाषा की बाधा के बावजूद डिजिटल अनुवाद की मदद से अपने प्रियजन के अंगदान का निर्णय लिया और अनेक मरीजों को जीवन मिला।

संपादकीय

पैलेट के जख्म

इसमें दो राय नहीं कि किसी आंदोलन के दौरान आंदोलनकारियों के किन्हीं परिस्थितियों में उग्र होने और जन-धन की हानि रोकने के लिए पुलिस-प्रशासन को कार्रवाई करनी होती है। इसमें भी दो राय नहीं है कि राज्य के पास हिंसा को रोकने और कानून-व्यवस्था को बनाये रखने के लिए पर्याप्त शक्तियां हैं। लेकिन प्रश्न इस बात का भी है कि लोकतांत्रिक तरीके से हो रहे विरोध को रोकने के लिए प्रयोग की गई ताकत का स्तर क्या रहा। जाहिर है राष्ट्रविरोधी ताकतों, हिंसक भीड़ तथा छात्रों के आंदोलन को एक ही तौर-तरीके से नहीं निपटा जा सकता है। इसी आलोक में सवाल पैदा होता है कि जंतर-मंतर से शुरु हुए संसद चलो मार्च को रोकने के लिए इस्तेमाल की गई ताकत क्या जरूरी थी? क्या उचित तरीके से अधिकृत थी? ऐसा ही विवाद इस आंदोलन के दौरान पैलेट गन के इस्तेमाल को लेकर खड़ा हुआ है। हालांकि, दिल्ली पुलिस ने शुरुआत से ही पैलेट गन के इस्तेमाल से इनकार किया। जबकि बाद में जनरल डायरी में यह दर्ज किया गया कि रैपिड एक्शन फोर्स ने एंटी-रायट गन से दो राउंड फायरिंग की थी। वहीं दूसरी ओर छात्र प्रदर्शनकारियों पर बल प्रयोग को लेकर विपक्षी दल सरकार पर लगातार हमलावर रहे हैं। खासकर, कांग्रेस नेतृत्व वाले विपक्ष ने गृह मंत्री पर पैलेट गन के इस्तेमाल को लेकर तीखे प्रहार किए हैं। वे बाकायदा गृह मंत्री के इस्तीफे को लेकर लगातार अभियान चलाते रहे हैं। इसी बीच सूचना के अधिकार के तहत दिल्ली के दो अस्पतालों से एकत्र की गई जानकारी के अनुसार बीस जुलाई को छात्रों के विरोध प्रदर्शन के दौरान कम से कम दस लोगों को पैलेट गन से चोट लगी थी। इन अस्पतालों में पैलेट गन से आहत छात्रों ने उपचार कराया था। निस्पृह, झूठ गन से घायल होने वालों का यह आंकड़ा इसलिए भी अहम है क्योंकि यह एक आधिकारिक रिकॉर्ड पर आधारित है, न कि किसी बिना पुष्टि वाले दावों पर आधारित है। दरअसल, पैलेट गन की जद में आये छात्रों के अनुभव परेशान करने वाले रहे हैं। वहीं दूसरी ओर कानून-व्यवस्था बनाये रखने के दौरान मेटल पैलेट गन पर रोक लगाने की मांग को लेकर दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए, सुप्रीम कोर्ट ने भी हाल ही में कहा था कि मौजूदा नियमों के तहत विशेष परिस्थितियों में इनका इस्तेमाल किया जा सकता है।

चिंतन-मनन

जो नहीं है उसे पाना हो ध्येय

असंतुष्ट होने का अर्थ दुखी होना नहीं है। असल में कोई आदमी पूरी तरह सुखी होकर भी असंतुष्ट हो सकता है। सुखी होने का मतलब है, जो है, उसे आनंद से भोगना। और असंतुष्ट होने का अर्थ है: जो नहीं है उसे आनंद से पैदा करने का श्रम करना। जब अधिकतम लोग समाज में इस भांति श्रम करते हैं तो समाज संपन्न और समृद्ध होता है। और जब अधिक लोग ऐसा सोचते हैं कि जो है बस ठीक है, वही रुक जाना है, तो फिर पूरा समाज धीरे-धीरे दरिद्र हो जाता है। जिनगी का सारा विकास, जो नहीं है, उसे पाने से ही होता है। इसलिए मैं तो कहूंगा कि ऐसा किसी जगह मानने की जरूरत नहीं है कि अब सब पूरा हो गया, अब भला मुझे क्या करना है ! यह मरने के ढंग है। यह अपने भीतर जिंदा रहते हुए मर जाना है। जब तक श्वास है, तब तक एक भी श्वास व्यर्थ नहीं जानी चाहिए। फिर भी अगर किसी व्यक्ति को ऐसा लगता हो कि मेरी तो सच में ही सारी आवश्यकताएं पूरी हो गईं, तो फिर ऐसे व्यक्ति को दूसरों की आवश्यकताएं पूरा करने में लग जाना चाहिए। अगर किसी व्यक्ति को पक्का ऐसा लगता है कि मेरी तो सभी आवश्यकताएं पूरी हो गईं, मैं क्यों श्रम करूँ? तो उसे चारों तरफ देखना चाहिए कि अब मेरा काम तो जमीन पर खत्म हो गया, लेकिन दूसरों की आवश्यकताएं पूरी नहीं हुई हैं, उनके लिए मैं श्रम करने में लग जाऊँ। लेकिन श्रम से नहीं बचा जा सकता। आपकी अपनी आवश्यकताएं पूरी हो गई हैं, तो अपने चारों तरफ देखिए। बहुत लोगों की पूरी नहीं हुई हैं, अतः उनके लिए श्रम करने में लग जाइए। लेकिन खाली बैठने का हक किसी को नहीं है। सन्यासी को भी खाली बैठने का हक नहीं है। देश को संपन्न करना है तो सभी को श्रम में लगना ही चाहिए। और श्रम में हम सभी लगे जब कोई आवश्यकता पूरी करनी हो। चाहे अपनी, चाहे किसी दूसरे की, लेकिन आवश्यकता पूरी करने की दौड़ जारी रहनी चाहिए। यह दौड़ शांत हो, यह दौड़ आनंदपूर्ण हो, इतना मैं कहूंगा। यह दौड़ पागल की नहीं होनी चाहिए, विश्किण को नहीं होनी चाहिए। यह दौड़ नौद को हराम कर देने वाली नहीं होनी चाहिए। यह दौड़ ऐसी नहीं होनी चाहिए कि आदमी बिल्कुल होश खो दे और दौड़ता रहे, और उसे पता भी न हो कि कहां दौड़ रहा है। यह दौड़ बहुत आनंदपूर्ण होनी चाहिए, यह दौड़ बहुत शांत होनी चाहिए, यह दौड़ बहुत स्वस्थ होनी चाहिए। यह हो सकती है। लेकिन हमने इस तरफ सोचा नहीं



ललित गर्ग

मनुष्य जीवनभर अपने लिए बहुत कुछ अर्जित करता है-धन, संपत्ति, प्रतिष्ठा, संबंध घड़ी में इन सबका महत्व समाप्त हो जाता है। तब यदि हमारे शरीर का कोई अंग किसी दूसरे मनुष्य की धड़कन बन जाए, हमारी आँखें किसी अंधेरे जीवन में रोशनी भर दें, हमारा यकृत या गुर्दा किसी परिवार के बुजुर्ग चिराग को फिर से जला दे, तो इससे बड़ी जीवन-सार्थकता और क्या हो सकती है? अंगदान मृत्यु के बाद भी जीवन को जारी रखने की वह मानवीय संभावना है, जो मनुष्य को केवल अपने लिए जीने वाले प्राणी से उठाकर मानवता के लिए जीने वाला बना देती है। विश्व अंगदान दिवस हमें इसी महान विचार से जोड़ता है। आज आवश्यकता केवल अंगदान के बारे में जानकारी देने की नहीं, बल्कि हमारी सोच बदलने की है। हमें यह प्रश्न अपने आप से पूछना होगा कि जिस शरीर को मृत्यु के बाद पंचतत्व में विलीन होना है, उसके उपयोगी अंग यदि किसी दूसरे व्यक्ति को जीवन दे सकते हैं तो उन्हें अपने साथ प्राणी में मिला देना अधिक सार्थक है या किसी की सांसों का हिस्सा बना देना? मृत्यु निश्चित है, लेकिन मृत्यु के बाद भी किसी के जीवन का कारण बनना हमारे हाथ में है। भारत की सांस्कृतिक मूल्य में शरीर और जीवन के



निर्मल रानी

देश इन दिनों लगभग राष्ट्रव्यापी छात्र आक्रोश व आंदोलन से रूबरू है। अभी कुछ दिन पहले ही नीट पेपर लीक और राष्ट्रीय परीक्षाओं में हुई धांधली के खिलाफ 6 जून से शुरू होकर 25 जुलाई 2026 तक चला आंदोलन केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मद प्रधान के इस्तीफे के बाद खत्म हुआ था। इसके बाद ही झारखंड में भी जेपीएससी और जेएसएससी परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं की निष्पक्ष जांच आदि मांगों को लेकर धरना, प्रदर्शन और विधानसभा घेराव जैसे कार्यक्रम कर रहे हैं। परन्तु कुछ दिनों पूर्व हुये दिल्ली के जंतर-मंतर व वर्तमान समय रांची में चल रहे छात्र आंदोलन में जहां कुछ बातें समान हैं वहीं कई बातें विरोधाभासी भी हैं। उदाहरण के तौर पर दोनों ही आंदोलन पेपर लीक और राष्ट्रीय परीक्षाओं में हुई धांधली व अनियमितताओं के खिलाफ किये गए हैं। जंतर मंतर की ही तरह रांची में

भी जहाँ आंदोलनस्थल पर अनेक स्वयंसेवी लंगर चला रहे हैं व आंदोलनकारी छात्रों के दूर दराज बैठे समर्थक फूड ऐप्स के जरिए सीधे आंदोलन स्थल पर भोजन ऑर्डर कर रहे हैं व छात्रों को मेडिकल व अन्य सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं। यहाँ भी भोजन इतनी अधिक मात्रा में आ रहा है कि आंदोलनकारी छात्रों ने वीडियो जारी कर लोगों से कुछ दिन ऑर्डर रोकने की अपील की ताकि खाना बर्बाद न हो और बचे हुए भोजन को जरूरतमंदों में बांटा जा सके। इसके अलावा रांची के स्थानीय दुकानदारों और आम नागरिकों द्वारा आंदोलन स्थल पर भोजन,समोसे, बिरयानी,नास्ता और पानी आदि पहुंचाया जा रहा है। अनशन पर बैठे छात्र नेताओं की संहत की देखभाल के लिए रांची के सदर अस्पताल में मेडिकल टीम नियमित रूप से आंदोलन स्थल पर पहुंचकर स्वास्थ्य जांच (ब्लड प्रेशर, शुगर लेवल) कर रही है। इसके अतिरिक्त झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने निर्देश जारी किया है कि आंदोलन के दौरान बीमार या चोटिल होने वाले छात्रों के इलाज का पूरा खर्च राज्य सरकार उठाएगी, चाहे वे सरकारी अस्पताल में इलाज कराएं या निजी अस्पताल में। परन्तु इन दोनों अर्थात दिल्ली व रांची के आंदोलन में जो सबसे बड़ा विरोधाभास नजर आ रहा है वह है जंतर मंतर के छात्र आंदोलन का विरोध करने वालों का रांची के आंदोलन में बढ़चढ़कर हिस्सा लेना। बड़ी हैरत की बात है कि जो वर्ग,जो संगठन और जिस विचारधारा से जुड़े लोग जंतर मंतर के आंदोलनकारियों को देशद्रोही, बदतमीज, गटर जनरेशन,गलियां बोलने व अपशब्द इस्तेमाल करने वालों का झुण्ड,विदेशी फंडिंग से चलने वाला आंदोलन बता रहे थे, दिल्ली के आंदोलन में जो लोग

हिन्दू-मुस्लिम का दृष्टिकोण दृढ रहे थे,जिन्हें दिल्ली के आंदोलन करी आवावा व चरित्रहीन नजर आ रहे थे वही लोग वही वर्ग और वही विचारधारा रांची के छात्र आंदोलन में कुछ इस्तरह बढ़चढ़कर हिस्सा लेने को उतावली है गोया रांची का आंदोलन छात्र आंदोलन के बजाये देश का दूसरा स्वाधीनता संग्राम हो? याद कीजिये कि जंतर मंतर आंदोलन के संदर्भ में ही एक हिंदुत्व विचारक और केरल भाजपा के बौद्धिक प्रकोष्ठ के पूर्व प्रमुख टीजी मोहनदास ने कहा था कि अगर र्थित उनंके नियंत्रण में होती, तो वे नई दिल्ली के आंदोलन स्थल के आसपास कफ़्यू लगाकर प्रदर्शनकारियों पर गोली चलावा देते। इस व्यक्ति ने प्रदर्शन में शामिल धर्मनिरपेक्ष और वामपंथी विचारधारा वाली छात्राओं व महिलाओं के साथ रेप करवाये जैसी बेहद अमर्यादित और आपत्तिजनक टिप्पणियां भी की थीं। साथ ही गोदी मीडिया के नाम से बदनाम सत्ता का पिछलग्गू मीडिया भी जो जंतर मंतर आंदोलन से या तो मुंह मोड़े हुआ था या इसी आंदोलन विरोधी वर्ग की तरह आंदोलन का रेटिवेट सेट करने में लगा है। इस दोहरपन का केवल एक ही कारण है कि दिल्ली में केंद्र व दिल्ली राज्य, दोनों ही जगह भारतीय जनता पार्टी की सरकारें हैं जबकि झारखण्ड में झारखंड मुक्ति मोर्चा , कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल, के गठबंधन यानी इण्डिया गठबंधन की सरकार है और झामुमो के हेमंत सोरेन इस सरकार के मुख्यमंत्री हैं। इसलिये इनका समर्थन छात्र आंदोलन को नहीं बल्कि यह झारखण्ड में

इण्डिया गठबंधन की सरकार का विरोध कर रहे हैं। इस अवसरवादी विचारधारा का विरोध करने वालों का चेहरा रांची में उस समय यी बेनकाब हुआ जबकि जंतर मंतर के आंदोलन का एक प्रमुख चेहरा और वहां अनशन पर बैठने वाली अखिल भारतीय छात्र संगठन AISA की केंद्रीय अध्यक्ष नेहा बोरा जब हजारों छात्रों के साथ विधानसभा के लिये माच निकाल रही थीं उस समय एक युवक ने नेहा पर स्थाही फेंक कर छात्र आंदोलन को समर्थन देने की अपनी हक'कत को उजागर कर दिया। घटना के तुरंत बाद मौके पर मौजूद सुरक्षाकर्मियों और प्रदर्शनकारियों ने युवक को पकड़कर उसकी पिटाई की और फिर पुलिस के हवाले कर दिया और पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। नेहा बोरा ने इस घटना पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिनके पास तर्क या बर्तकी की क्षमता नहीं होती, वे ऐसी हरकतों पर उतर आते हैं। उन्होंने इस हमले के पीछे भाजपा और आरएसएस से जुड़े लोगों का हाथ होने का आरोप लगाया। गौरतचेब है कि नेहा बोरा व उनका संगठन अखिल भारतीय छात्र संगठन AISA जंतर मंतर के आंदोलन में भी शामिल था और उसी उत्साह के साथ रांची में भी सक्रिय है। जबकि रांची में छात्र आंदोलन का मुख्य चेहरा बनने की इच्छा पालने वाले लोग जंतर मंतर में न केवल लापता थे बल्कि उसके विरोध में भी खड़े थे। कहा जा सकता है कि जंतर मंतर व रांची दोनों जगह छात्र आंदोलन व उनकी मांगें व समस्याएँ तो लगभग एक हैं परन्तु उनके अनेक रूप देखे जा रहे हैं। (यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)



महानगर मेट्रो

भारत का भरोसेमंद

मीडिया नेटवर्क


काइम स्टोरी


इन्वेस्टिगेशन स्टोरी


मनोरंजन स्टोरी


स्योर्ट्स स्टोरी

सहित बेहतरीन और विश्वसनीय खबरों के लिए
महानगर मेट्रो को फॉलो करें


विश्वसनीय खबरें


तेज़ अपडेट्स


ग्राउंड रिपोर्टर्स


एक्सक्लूसिव इन्वेस्टिगेशन




FOLLOW NOW




हर खबर पर सबसे पहले नज़र






/MahanagarMetro


mahanagarmetro


/MahanagarMetro


www.mahanagarmetro.com





पवन भाकन

— युग एडिटर —


सच्ची खबरें


सटीक जानकारी


तेज़ अपडेट


आपके साथ, आपके लिए

बदयू। उत्तर प्रदेश के बदयू में एक डॉक्टर के साथ मारपीट और उनकी कार में तोड़फोड़ का मामला सामने आया है. पुलिस के मुताबिक, डॉक्टर की कार ने एक गाय को टक्कर मार दी थी. इसके बाद मौके पर जुटी भीड़ ने उन पर हमला कर दिया. गंभीर रूप से घायल गाय की बाद में मौत हो गई. बुधवार को पुलिस ने इस घटना की जानकारी दी. यह घटना मंगलवार शाम बिचुरी गांव में हुई. उसावां सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में तैनात डॉक्टर राहुल सिद्धार्थ अपनी कार से बदयू लौट रहे थे. इसी दौरान उनकी गाड़ी से गाय को टक्कर लगा गई. पुलिस का कहना है कि हादसे के कुछ ही देर बाद वहां भीड़ इकट्ठा हो गई. इसका बाद डॉक्टर के साथ मारपीट की गई और उनकी कार को भी नुकसान पहुंचाया गया. इस घटना का एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है. पुलिस के मुताबिक, वीडियो में कई लोग डॉक्टर के साथ मारपीट करते और कार में तोड़फोड़ करते दिखा रहे हैं. वीडियो में यह भी दिख रहा है कि मौके पर पुलिसकर्मों मौजूद थे. इसी वायरल वीडियो के आधार पर पुलिस ने पूछताछ के लिए चार लोगों को हिरासत में लिया है. घटना के बाद कुछ स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया कि हादसे के समय डॉक्टर ने शराब पी रखी थी. उनका कहना था कि कार से कई बीयर के कैन मिले थे. हालांकि पुलिस ने कहा कि डॉक्टर की मेडिकल जांच कराई गई और उसमें शराब नहीं पाई गई. पुलिस के मुताबिक, डॉक्टर की मंगलवार को जांच हुई थी और बाद में वह मुसदाबाद चले गए. बदयू नगर पुलिस अधीक्षक अभिषेक कुमार सिंह ने कहा कि डॉक्टर की तरफ से आज शिकायत दी जा रही है. शिकायत मिलते ही आरोपियों के खिलाफ कानून की संबंधित धाराओं में कार्रवाई की जाएगी. पुलिस का यह भी कहना है कि शिकायत और दूसरे सबूतों की जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी.

जिलों की कमान उत्तराखंड के दिग्गज दलित नेता यशपाल आर्य के बेटे संजीव आर्य को दी गई है। काँग्रेस ने यूपी संगठन को छह जनों में बांट रखा है, अब इन्होंने छह जनों की जिम्मेदारी हाल में नियुक्त किए गए राष्ट्रीय सचिवों को दी है। पश्चिम यूपी की कमान जिन्हें सचिव के दलित नेता को पाटी नें सौंपा है, उससे साफ है कि चंद्रशेखर आजाद के बढ़ते सियासी ग्राफ को काउंटर करने की है। उत्तर प्रदेश में काँग्रेस ने अपने छह राष्ट्रीय सचिव को अलग-अलग जनों का प्रभार सौंपा है। काँग्रेस ने संजीव आर्य को वेस्ट जनों का प्रभारी बनाया है। आर्य मेरठ, सहारनपुर और मुरादाबाद, मंडल के 14 जिले सहारनपुर मुजफ्फरनगर, शामली, मेरठ, बुलंदशहर, गांगापत, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर, हापड़, मुरादाबाद, रामपुर, अमरोहा, बिजनौर संभालेंगे। संजीव आर्य दलित समुदाय से आते हैं और उत्तराखंड के दिग्गज नेता यशपाल आर्य के बेटे हैं। पश्चिमी यूपी के बाकी जिलों को ब्रज जेठान में शामिल किया गया है। ब्रज जेठान का प्रभारी कुणाल चौधरी को बनाया है, जो मध्य प्रदेश से आते हैं। उनको ब्रज क्षेत्र के आगरा, बरेली और अलीगढ़ मंडल के 13 जिलों मथुरा,

महाराष्ट्र आरक्षण की मांगों पर सीएम देवेंद्र फडणवीस की दो टूक, सिर्फ सविधान के दायरे में सरकार करेगी फैसला



महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई। मराठा आरक्षण और कुनबी सर्टिफिकेट को लेकर चल रहे बहस के बीच महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस ने दो टूक बयान दिया है। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र सरकार संवैधानिक दायरे में रहकर आरक्षण की सभी मांगों पर सुनवाई करेगी। किसी भी समुदाय के अधिकारों में कटौती नहीं की जाएगी क्योंकि सरकार सभी के लिए न्याय चाहती है। सीएम देवेंद्र फडणवीस ने मंगलवार को कहा कि महाराष्ट्र सरकार अलग-अलग समुदायों की आरक्षण संबंधी मांगों पर सुनवाई तो करेगी, लेकिन फैसले सिर्फ संविधान और नियमों के दायरे में ही लिए जाएंगे। जो मांगे संवैधानिक दायरे में नहीं होंगी, उन्हें खारिज कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार मराठा, ओबीसी, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, और खानाबदोश जनजाति समेत सभी समुदायों को न्याय दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है। सरकार एक समूह का हक छीनकर दूसरे को नहीं देगी। सरकार सविधान के अनुसार चलती है और आगे भी ऐसा ही करेगी। यह दबाव में या नियमों से हटकर काम नहीं करती। हालांकि, सरकार सबकी बात सुनती है। अगर कोई मांग जनहित में है और संविधान के दायरे में आती है, तो उस पर विचार किया जाएगा। देवेंद्र फडणवीस, सीएम महाराष्ट्र सीएम फडणवीस ने राज्य के राजस्व मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले के फैसले का बचाव किया, जिसमें उन्होंने कुनबी सर्टिफिकेट से जुड़े जापन को विभाग के पास छानबीन के लिए भेजा था।

नागपुर में तेज रफ्तार कार खड़े ट्रक से टकराई, दो युवकों की मौत, दोस्त की बर्थडे पार्टी में जाते समय हुआ हादसा



महानगर मेट्रो ब्यूरो

नागपुर। महाराष्ट्र के नागपुर में बुधवार तड़के एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया, जिसमें दो युवकों की मौत हो गई, जबकि एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया. यह हादसा कलमना थाना क्षेत्र के भरतवाड़ा चौक के पास हुआ, जहां तेज रफ्तार कार सड़क किनारे खड़े ट्रक से जा टकराई. कार में तीन युवक सवार थे. वे अपने दोस्त की जन्मदिन की पार्टी में शामिल होने जा रहे थे. जानकारी के अनुसार, हादसा बुधवार की सुबह करीब 5 बजे का बताया जा रहा है. पुलिस के मुताबिक, इलेक्ट्रिक कार में तीन युवक सवार होकर जा रहे थे. कार जब भरतवाड़ा चौक के पास पहुंची तो कार चला रहे युवक का वाहन से कंट्रोल बिगड़ गया. इसके बाद बेकाबू कार सड़क किनारे खड़े ट्रक में जा भिड़ी. टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई. मौके पर चीख-पुकार मच गई. यह हादसा इतना भीषण था कि कार में सवार दो युवकों की मौके पर ही मौत हो गई. जब आसपास के लोगों ने देखा तो तुरंत मौके पर पहुंचे और बचाव कार्य शुरू किया. इसी के साथ लोगों ने घटना की सूचना पुलिस को दी. हादसे की सूचना मिलते ही कलमना पुलिस मौके पर पहुंची और जायजा लिया. पुलिस ने दोनों मृतकों के शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए सरकारी अस्पताल भेज दिया. मृतकों की पहचान भौमिक लारोकर और सागर मेलवानी के रूप में हुई है. वहीं, हादसे में मिला बेहर गंभीर रूप से घायल हुआ है. उसे तत्काल इलाज के लिए एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसका उपचार चल रहा है.

बारिश में चिता जल रही थी, ऊपर से तिरपाल ताने खड़े थे लोग महाराष्ट्र के अंतिम संस्कार की कहानी



महानगर मेट्रो ब्यूरो

ठाणे। आदिवासी बस्ती शाहपुर में उभरई गांव की एक तस्वीर सामने आई है. यहां ग्राम पंचायत समिति की सदस्य जयाबाई महादू वाघ की मौत हो गई थी. गांव में श्मशान नहीं होने की वजह से उनका अंतिम संस्कार खुले मैदान में करना पड़ा. मंगलवार को इलाके में तेज बारिश हो रही थी, उसी दौरान गांव के लोग तिरपाल तानकर अंतिम संस्कार कर रहे थे. यहां ग्राम पंचायत समिति की सदस्य जयाबाई महादू वाघ की मौत बीमारी के चलते हो गई थी. उनका अंतिम संस्कार गांव के पास खुले मैदान में किया गया. इस दौरान अचानक तेज बारिश शुरू हो गई. बारिश के कारण चिता की आग बुझने लगी थी. ऐसे में ग्रामीण चिता के ऊपर तिरपाल पकड़कर खड़े हो गए, ताकि बारिश का पानी सीधे चिता पर न गिरे और अंतिम संस्कार की प्रक्रिया पूरी हो सकेगांव के लोगों का आरोप है कि उभरई की आदिवासी बस्ती में आज भी श्मशानभूमि नहीं है. इसके लिए पिछले करीब दो साल से प्रशासन से लगातार मांग की जा रही है. ग्रामीणों के मुताबिक, करीब दो साल पहले शाहपुर के तत्कालीन तहसीलदार परमेश्वर कालूसे ने भी गांव में श्मशान के लिए भी जगह देखी थी. उस समय जल्द श्मशान बनाने की बात कही गई थी, लेकिन ग्रामीणों के मुताबिक अब तक इस समस्या का कोई समाधान नहीं हो पाया है. करीब 100 लोगों की आबादी वाली इस आदिवासी बस्ती के लोगों को आज भी अपने परिजनों का अंतिम संस्कार खुले मैदान में करना पड़ता है. बारिश के मौसम में परेशानी और बढ़ जाती है. कोचुड़ और बारिश के बीच अंतिम संस्कार करना ग्रामीणों के लिए बड़ी चुनौती बन जाता है.

शाहपुर के 250 से ज्यादा गांवों में ऐसी ही समस्या

ग्रामीणों और सामाजिक संगठनों के लोगों का कहना है कि शाहपुर तालुका के 250 से ज्यादा गांवों में श्मशान भूमि से जुड़ी समस्या बनी हुई है. कहीं श्मशान के लिए जमीन नहीं है. कहीं बजट का अभाव है. शाहपुर तालुका में 110 ग्राम पंचायतें, 227 राजस्व गांव और अन्य 414 ग्रामीण बस्तियां हैं. दूरदराज के कई इलाकों में आज भी सड़कें नहीं हैं. बरसात के दिनों में ग्रामीणों को नाले और नदी पार करके शवों को अंतिम संस्कार के लिए ले जाना पड़ता है.

बिल्डिंग की 11 वीं मंजिल पर लगी आग नवजात समेत 2 जिंदा की जिंदा जलकर मौत

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई। विले पार्ले पश्चिम में एक आवासीय इमारत में भीषण आग लगने से एक शिशु सहित दो लोगों की मौत हो गई, जबकि छह अन्य घायल हो गए। मुंबई दमकल विभाग के अनुसार, उन्हें मंगलवार रात करीब 10:00 बजे आग लगने की सूचना मिली। शुरू में आग को स्तर-1 माना गया था, लेकिन रात 10:16 बजे यह स्तर-2 में बदल गई। हालांकि, निरंतर प्रयासों के बाद, रात करीब 1 बजे आग पर काबू पा लिया गया। पुलिस विभाग के अधिकारी आरवी भोसले ने बताया कि रात करीब 10 बजे एक 11 मंजिला इमारत की 11वीं मंजिल पर स्थित एक आवासीय फ्लैट में आग लग गई। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इस दौरान एक दमकलकर्मी भी घायल हो गया। धिकारियों ने बताया कि आग लगने का कारण अज्ञात है और यह पता लगाने के प्रयास जारी हैं कि आग इतनी तेजी से पूरे फर्श पर कैसे फैल गई। आग लगने की सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की करीब 10 गाड़ियां मौके पर पहुंचीं, और आग पर



काबू पाने के प्रयास शुरू कर दिए। इसके अलावा, मुंबई पुलिस, 108 एम्बुलेंस सेवा और संबंधित वार्ड के कर्मचारियों को भी मौके पर तैनात किया गया। आरवी

भोसले ने यह भी बताया कि आग इमारत की 11वीं मंजिल पर स्थित दो फ्लैटों में बिजली के तारों, एक एसी यूनिट और सोफा, बिस्तर, रसोई के सामान आदि सहित

दिल्ली में BMW से महिला को टक्कर मारकर भागा आरोपी, मौत, गुस्साए लोगों ने लगाया जाम



महानगर मेट्रो ब्यूरो

दिल्ली। मंगलवार दोपहर BMW कार ने दिल्ली कैट एरिया में सड़क पार कर रही एक महिला को टक्कर मार दी, जिससे उनकी मौत हो गई। लोगों का आरोप था कि कार चला रहा शख्स घायल महिला को अस्पताल ले जाने की बजाय मौके से फरार हो गया। लोगों ने महिला को अस्पताल में भर्ती कराया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार मंगलवार 12 बजे एक्सीडेंट की सूचना पुलिस को मिली थी। मौके पर पुलिस टीम पहुंची पता चला कि घायल महिला को हरि नगर के दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल में भेजा जा चुका

है। वहां डॉक्टरों ने महिला को मृत घोषित कर दिया, उनकी पहचान जनवर्ती (48) के रूप में हुई। जो ईस्ट मेहराम नगर इलाके की रहने वाली थीं। सड़क पार करने के दौरान कार ने उन्हें टक्कर मारी। इस मामले में दिल्ली कैट थाना की पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर आरोपी को हिरासत में ले लिया गया है।

आरोपी की पहचान दीपक (38) के रूप में हुई है।

यह मंडोली के प्रताप नगर इलाके का रहने वाला है और पिछले 6 महीने से गाड़ी चला रहा था। हादसे के समय वह एयरपोर्ट से लौट रहा था। इसी दौरान सड़क पार कर रही महिला को उसने टक्कर मार दी। गाड़ी को भी पुलिस ने कब्जे में ले लिया है। आगे की छानबीन पुलिस के द्वारा की जा रही है। मृतक महिला के बेटे ने बताया कि उनकी मां दिल्ली कटोनमेंट बोर्ड में काम करती थी। दोपहर में खाना खाने घर आ रही थी, उसी दौरान तेज रफ्तार कार ने उनकी मां को टक्कर मार दी। जैसे

स्वतंत्रता दिवस की फुल ड्रेस रिहर्सल के चलते सड़कें सुबह 10 बजे तक रहेंगी बंद

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली. स्वतंत्रता दिवस की फुल ड्रेस रिहर्सल के चलते 13 अगस्त को लाल किले और आसपास सुबह 4 से 10 बजे तक कई सड़कें बंद रहेंगी। केवल वैध पार्किंग लेबल वाली अधिकृत गाड़ियों को प्रवेश मिलेगा। 12 अगस्त रात 12 बजे से 13 अगस्त सुबह 11 बजे तक कमर्शियल गाड़ियों, इंटरस्टेट बसों और कई स्थानीय बस रूट पर भी प्रतिबंध रहेगा। नेताजी सुभाष मार्ग (दिल्ली गेट-छत्ता रेल चौक), लाथियन रोड (जीपीओ-छत्ता रेल चौक), एसपी मुखर्जी मार्ग (एचसी सेन मार्ग-यमुना बाजार चौक), चांदनी चौक रोड (फाउंटेन चौक-लाल किला), निषाद राज मार्ग, एस्प्लेनेड रोड और रिंग रोड (राजघाट-आईएसबीटी) बंद रहेंगे। सी-हेक्सगान, कॉर्पोनिकस मार्ग, मंडी हाउस, सिकंदरा रोड, तिलक मार्ग, मथुरा रोड, बीएसजेड मार्ग, JLN मार्ग, निजामुद्दीन खट्टा-आईएसबीटी रिंग रोड



और आउटर रिंग रोड से भी बचने की सलाह है। साउथ-नॉर्थ के लिए अरविंदो मार्ग, सफदर्जंग रोड, मदर टेरेसा क्रिसेंट, मंदिर मार्ग, पंचकुड़्यां रोड, रानी झांसी रोड, कर्नाट प्लेस-मिंटो रोड-भवभूति मार्ग या निजामुद्दीन ब्रिज-पुस्ता रोड-जीटो रोड-युधिष्ठिर सेतु का इस्तेमाल करें। ईस्ट-वेस्ट के लिए एनएच-9, बारापूला, डीएनडी, विकास मार्ग, आईपी मार्ग, डीडीयू मार्ग और युधिष्ठिर सेतु विकल्प रहेंगे। 12 अगस्त रात 12 बजे से 13 अगस्त सुबह 11 बजे तक नॉर्थ-

‘कपड़े पहन के तो बैठो’, वायरल वीडियो पर दिल्ली CM का AAP विधायक पर निशाना, MLA ने नकारे सारे आरोप

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली. दिल्ली विधानसभा के मानसून सत्र में सोमवार को CM रेखा गुप्ता और AAP विधायक अनिल झा के बीच तीखी नोकझोंक देखने को मिली। मामला सोशल मीडिया पर वायरल एक वीडियो से जुड़ा है, जिसमें किराड़ी से विधायक अनिल झा बनियान और शॉर्ट्स में लोगों के दस्तावेजों पर साइन करते नज् आ रहे हैं। वीडियो सामने आने के बाद मुख्यमंत्री ने विधायक के पहनावे और सार्वजनिक व्यवहार पर सवाल उठाए। बताया जा रहा है कि यह वीडियो दिल्ली सरकार की ‘दिल्ली लक्ष्मी योजना’ के आवेदन से जुड़ा है। इस योजना के तहत पात्र महिलाओं को हर महीने 2500 रुपये की आर्थिक मदद दी जानी है। वीडियो में कई लोग, जिसमें महिलाएं भी शामिल हैं, विधायक के सामने लाइन में खड़े दिखाई दे रहे हैं और अनिल झा आवेदन पत्रों पर साइन कर रहे हैं।

CM ने MLA को सुनाई खरी-खोटी

रेखा गुप्ता ने विधानसभा में अनिल झा पर निशाना साधते हुए कहा कि जब महिलाएं अपने कागजों



पर साइन कराने आती हैं तो जनप्रतिनिधि को कम से कम ठीक कपड़े पहनकर बैठना चाहिए। उन्होंने साफ-साफ शब्दों में कहा- अरे, कपड़े पनकर तो बैठो, महिलाएं साइन कराने आ रहीं हैं। इसे शर्मानाक बताते हुए कहा कि जनता भी इस तरह के वीडियो को लेकर सवाल कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की गरिमा और सम्मान बनाए रखना सभी चुने हुए प्रतिनिधियों की जिम्मेदारी है। उन्होंने विधानसभा की मर्यादा और लोकतांत्रिक व्यवहार का हवाला देते हुए कहा कि आपत्तिजनक व्यवहार को स्वीकार नहीं किया जाएगा। रेखा गुप्ता ने विधानसभा की कार्यवाही के दौरान अनिल झा पर आपत्तिजनक इशारे करने का आरोप भी लगाया। मुख्यमंत्री ने असेंबली के दौरान, उचित कार्यवाही की मांग की। उन्होंने कहा कि सदन लोकतांत्रिक मर्यादा और सम्मान का सबसे बड़ा मंच है।

AAP विधायक अनिल झा ने मुख्यमंत्री के आरोपों को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि अगर उन्होंने कोई आपत्तिजनक इशारा किया है तो उसका वीडियो सामने लाया जाए। झा ने कहा कि सदन में इनके लोग भी कई तरह की बातें करते हैं, लेकिन उन पर मुख्यमंत्री कुछ नहीं कहतीं। उन्होंने खुद पर लगाए आरोपों को पक्षपातपूर्ण बताया। दिल्ली लक्ष्मी योजना को दिल्ली सरकार ने जुलाई में मंजूरी दी थी। इसके तहत 21 से 60 साल की पात्र महिलाओं को हर महीने 2500 रुपये देने का प्रावधान है। योजना के लिए 2026-27 के बजट में 5110 करोड़ रुपये रखे गए हैं और सरकार ने 17 लाख से ज्यादा महिलाओं तक इसका लाभ पहुंचाने का लक्ष्य बताया है। रेखा गुप्ता ने AAP सरकार पर भी साधा निशाना मुख्यमंत्री ने इस विवाद के बीच पिछली AAP सरकार पर भी हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछली सरकार के कार्यकाल में 30 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा के घोटाले हुए। रेखा गुप्ता ने कथित घोटालों में ‘शीशमहल’, शराब, क्लारसरूम, अस्पताल, विज्ञापन, सब्सिडी और ई-वे बिल से जुड़े मामलों का नाम लिया। जारी है अनिल झा पर मुख्यमंत्री की टिप्पणी ऐसे समय आई है.

दिल्ली की बिजली कंपनियों पर 38000 करोड़ का वित्तीय बोझ, CM रेखा गुप्ता बोलीं- जनता पर नहीं डालेंगे भार



महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली के बिजली उपभोक्ताओं पर बढ़ते आर्थिक बोझ के बीच मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि दिल्ली की बिजली कंपनियों ने करीब 38,000 करोड़ रुपये का वित्तीय अंतर पैदा किया है, लेकिन उनकी सरकार इसका भार आम उपभोक्ताओं पर नहीं डालने देगी। गुप्ता ने कहा कि सरकार इस मामले में मजबूती से खड़ी है और अदालत में इसे चुनौती दे रही है। विधानसभा में बोलते हुए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि 2014 के बाद बिजली दरों में बढ़ोतरी नहीं की गई, जबकि बिजली खरीद और वितरण से होने वाले वास्तविक राजस्व के बीच अंतर बढ़ता गया। उनके मुताबिक, यह अंतर धीरे-धीरे एक ‘रेगुलेटरी एसेट’ के रूप में जमा होता गया। गुप्ता ने कहा कि सरकार उपभोक्ताओं पर इसका बोझ डालने के बजाय इस मामले को कानूनी तौर पर लड़ रही है। पिछली दिल्ली सरकार के वित्त और प्रदर्शन से जुड़ी दो CAG रिपोर्टों पर विधानसभा में चर्चा का जवाब देते हुए गुप्ता ने पू्व AAP सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछली सरकार ‘घोटालों’ में डूबी हुई थी और तत्कालीन मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल फाइलों पर हस्ताक्षर करने से बचते थे। गुप्ता ने कहा कि उनकी सरकार ने पिछली सरकार की 19 CAG रिपोर्ट विधानसभा में पेश कराईं, जिनसे कथित अनियमितताओं का पता चलता है। मुख्यमंत्री ने श्रव के कई निष्कर्षों का जिक्र किया। इनमें कथित तौर पर केंद्र से मिलने वाले सहायता अनुदान में चूक, योजनाओं की घोषणा के बावजूद उनका क्रियान्वयन न होना, टेंडर प्रक्रिया में अनियमितताओं और तस्झ रिफंड का भुगतान न करना शामिल है। गुप्ता ने दावा किया कि पिछली सरकार के पास पैसा उपलब्ध था, लेकिन या तो उसे खर्च नहीं किया गया या ‘अनियमित तरीके से’ खर्च किया गया। गुप्ता ने आरोप लगाया कि AAP सरकार ने 32 योजनाओं की घोषणा की और उनका श्रेय लिया, लेकिन उन पर कोई पैसा खर्च नहीं किया। उन्होंने यह भी दावा किया कि 2,000 करोड़ रुपये से ज्यादा की 34 योजनाओं को वित्तीय मंजूरी दी गई थी, लेकिन उन्हें लागू नहीं किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछली सरकार ने स्कूलों और सड़कों जैसे बुनियादी ढांचे पर काम करने के बजाय घोषणाओं और प्रचार पर जोर दिया। मुख्यमंत्री ने पिछली सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि उसने दिल्ली को ‘तबाह’ कर दिया और लोगों को ‘लूट’। उन्होंने आरोप लगाया कि योजनाओं के नाम पर घोषणाएं की गईं, प्रचार पर करोड़ों रुपये खर्च हुए, लेकिन अंतिम नतीजा शून्य रहा। गुप्ता ने कहा कि उनकी सरकार अब शासन, विकास और योजनाओं के क्रियान्वयन को प्रभावित करने वाली खामियों को दूर करने पर काम कर रही है। AAP की ओर से इन आरोपों पर तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई।

‘दम घुट रहा था, कपड़े पसीने में भीग गए स्पाइस जेट फ्लाइट में बेहाल हुए यात्री



महानगर मेट्रो ब्यूरो

पुणे। दिल्ली से पुणे जाने वाली स्पाइस जेट की फ्लाइट (SG 105) में सवार यात्रियों को 11 अगस्त 2026 की रात बेहद खराब अनुभव का सामना करना पड़ा. फ्लाइट में एसी और वेंटिलेशन बंद होने के चलते यात्रियों का दम घुटने लगा, जिससे प्लेन के अंदर और रनवे पर जमकर हंगामा हुआ. फ्लाइट में मौजूद यात्री लेशपाल ने आपबीती सुनाई. उन्होंने कहा, ‘हमारी स्पाइस जेट फ्लाइट का समय रात 9.55 बजे का था, लेकिन इसमें देरी हुई. बोर्डिंग रात 10.30 बजे शुरू हुई और हम प्लेन में सवार हो गए. करीब आधा घंटा बीत गया, लेकिन अंदर कोई वेंटिलेशन नहीं था. हमें सांस लेने में तकलीफ होने लगी और एसी भी नहीं चल रहा था.’ उन्होंने आगे कहा, ‘क्योंकि मैं अक्सर फ्लाइट में सफर नहीं करता, इसलिए मुझे लगा कि ये सिर्फ एक तकनीकी समस्या है. बाद में स्थिति इतनी बिगड़ गई कि हमारे कपड़े पसीने से पूरी तरह भीग गए. हर यात्री का यही हाल था.’ यात्री लेशपाल ने बताया कि गमी की वजह से बच्चे रो रहे थे, गर्भवती महिलाओं को परेशानी हो रही थी. ऐसे में हमने वहीं टरमैक पर विरोध-प्रदर्शन किया क्योंकि स्टाफ सहयोग नहीं कर रहा था और हंगामा करने पर उल्टा जवाब दे रहा था.



भचाऊ के हाईवे पर देशभक्ति का एक बड़ा तिरंगा सैलाब उमड़ा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

भचाऊ। अगस्त 2026 भारत की आज़ादी और राष्ट्रीय पहचान के प्रतीक पवित्र तिररो के प्रति देशभक्ति और सम्मान की भावना जगाने की प्रबल इच्छा के साथ, आज भचाऊ में एक अभूतपूर्व राष्ट्रीय त्योहार जैसा माहौल बनाया गया। यहाँ, श्री लेवा पाटीदार बोर्डिंग द्वारा संचालित गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल, भचाऊ के सम्मानित प्रिंसिपल श्री प्रकाश कुमार चंपकलाल पंडित साहेब के कुशल और प्रेरक मार्गदर्शन में एक भव्य और अनुशासित ‘महा तिरंगा रैली’ का आयोजन किया गया। स्कूल के कक्षा 9 और 10 के 350 से ज्यादा स्टूडेंट्स ने बड़े जोश, उत्साह और बेमिसाल राष्ट्रीय भावना के साथ इस राष्ट्रीय गौरव मार्च में भाग लिया। जब ये नवलोहिया युवा हाथों में तिरंगा लेकर भारत माता जय घोष और देशभक्ति के आसमान छूते नारों के साथ निकले, तो माहौल में एक अनोखा और अद्भुत जोश देखने को मिला। स्कूल परिसर से शुरू हुई यह भव्य रैली शहर के मुख्य राजमार्गों से होते हुए भचाऊ के नए बस स्टैंड पहुंची और वहां से आगे बढ़कर प्रतीकात्मक शौर्य के केंद्र शिवाजी गेट पर खत्म हुई। इस भव्य आयोजन में सामाजिक सहयोग का एक बेहतरीन उदाहरण भी देखने को मिला। भचाऊ नगर पालिका ने देश सेवा के इस पवित्र काम में शामिल होने वाले भावी नागरिकों के लिए उंडे पीने के पानी की बोतलें, बिस्कुट, ठंडा शरबत बांटने के साथ-साथ हर छात्र के लिए एक सुंदर तिरंगा झंडा बांटने का सराहनीय तत्तजाम किया। स्कूल के सभी शिक्षकों और पूरे टीचिंग स्टाफ ने मिलकर इस रैली को पूरी तरह अनुशासित और सफल बनाने में सराहनीय सहयोग दिया। इस भव्य राष्ट्रीय उत्सव और रैली के बारे में आधिकारिक जानकारी स्कूल के वरिष्ठ शिक्षक और अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ - अनुदानित माध्यमिक विभाग, कच्छ जिला के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री रूपेशभाई सोलंकी ने एक प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

वीर पहाड़िया और अपारशक्ति खुराना स्टार 'प्रेम कीतानु' अनाउंस हुई, 2 अक्टूबर को थिएटर में रिलीज़ होगी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

प्रोड्यूसर गौरव वर्मा के नए बैनर अवनिका फिल्म्स ने फर्स फिल्म्स के साथ मिलकर अपनी पहली फिल्म 'प्रेम कीतानु' अनाउंस की है। यह फिल्म 2 अक्टूबर, 2026 को दुनिया भर के थिएटर में रिलीज़ होगी। फिल्म में वीर पहाड़िया, आफिया सैयद, अपारशक्ति खुराना, राकेश बेदी और निखिल विजय हैं। फिल्म को 'सिर्फ एक बड़ा काफ़ी है' और 'एक्सप्रेट्स' फेम डायरेक्टर अपूर्व सिंह काकाई ने डायरेक्ट किया है। 'प्रेम कीतानु' उन लड़कों की कहानी है, 'जिन्हें कॉलेज में कोई मार्क्स नहीं मिले, कोई उम्मीद नहीं, कोई प्यार नहीं। उन्हें बस दोस्त और बहुत सारा दिल टूटा।' यह फिल्म आज के युवाओं और उनकी ज़िंदगी, एम्बिशन और प्यार से जुड़े स्ट्रगल को मजेदार और सिंपल तरीके से दिखाती है।उठु यह फिल्म अवनिका फिल्म्स की पहली फिल्म है। गौरव वर्मा ने यह बैनर उन कहानियों को एक प्लेटफॉर्म देने के लिए शुरू किया, जिनमें इमोशनल सच्चाई के साथ-साथ थिएटर में भी मजबूत अपील हो।

भारतीय मानव अधिकार सहकार ट्रस्ट की आकस्मिक बैठक

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नागदा। होटल MP-13 में भारतीय मानव अधिकार सहकार ट्रस्ट की आकस्मिक बैठक आयोजित हुई। बैठक में आगामी सामाजिक सेवा, जनजागरूकता और मानवाधिकार संबंधी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने के साथ संगठन के विस्तार को लेकर चर्चा की गई। बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील सिंह यादव, राष्ट्रीय संयोजक डॉ. प्रेम कुमार वैद्य, राष्ट्रीय प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर सुनील सेठिया, युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष कृष्णा यादव, हेल्थलाइन प्रभारी युवराज सिंह राठौड़, प्रदेश प्रभारी डॉ. बलबहादुर सिंह राठौड़ और उज्जैन जिला कार्यकारिणी अध्यक्ष मंदेश शर्मा सहित पदाधिकारी मौजूद रहे। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि संगठन का उद्देश्य मानव सेवा, जनहित, सामाजिक न्याय और जरूरतमंदों की सहायता को जमीनी स्तर तक पहुंचाना है। नियमित सामाजिक गतिविधियां आयोजित करने और आगामी कार्यक्रमों की जिम्मेदारियां तय करने पर भी विचार-विमर्श हुआ।

पीएम मोदी ने पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की आत्मकथा का किया विमोचन

-कार्यक्रम में शॉर्टकट के दौर में युवाओं को सावधान रहने का दिया संदेश

नई दिल्ली(एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी बुधवार को पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की आत्मकथा के विमोचन कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने रामनाथ कोविंद की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने राष्ट्रपति के रूप में एक मिसाल कायम की है। पद छोड़ने के बाद भी रामनाथ कोविंद देश के लिए लगातार काम कर रहे हैं। वह 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' को लेकर बनी जेपीसी के अध्यक्ष भी हैं। पीएम मोदी ने कोविंद की आत्मकथा 'भारतीय गणतंत्र की विजय- मेरा जीवन, मेरा संघर्ष' का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि देश की नई पीढ़ी को इस किताब को पढ़ना चाहिए और कोविंद के अनुभवों से सीखना चाहिए।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक पीएम मोदी ने कहा कि किताब का शीर्षक बिल्कुल सही है। इसमें रामनाथ कोविंद के व्यक्तिगत जीवन और संघर्षों की कहानी है, लेकिन उनकी सफलता सिर्फ उनकी



व्यक्तिगत जीत नहीं, बल्कि भारतीय गणतंत्र और लोकतंत्र की जीत है। पीएम ने कार्यक्रम में एक वाक्ये का जिक्र करते हुए कहा कि जब वे इस किताब को पढ़ना चाहिए और कोविंद के अनुभवों से सीखना चाहिए।

दखाजे तक आते थे। पीएम मोदी ने कहा कि उन्होंने कई बार पूर्व राष्ट्रपति से ऐसा न करने को कहा, लेकिन उन्होंने अपनी यह विनम्रता कभी नहीं छोड़ी। पीएम मोदी ने रामनाथ कोविंद के गांव परीछ जाने का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति बनने के बाद जब कोविंद अपने गांव पहुंचे तो उन्होंने अपने शिक्षकों के पैर छुए, गांव की मिट्टी को नमन किया और वहां के लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

गटर जनरेशन कहकर फंसी कंगना ! 21 को सुप्रीम कोर्ट में होगी सुनवाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी की सांसद और अभिनेत्री कंगना रनौत अपनी विवादित बयानों के चलते एक बार फिर कानूनी मुश्किलों में घिरती नजर आ रही हैं। प्रदर्शनकारियों और जेन जेड के खिलाफ कथित रूप से आपत्तिजनक टिप्पणी करने के मामले में उत्तर प्रदेश के आगरा की एक विशेष अदालत ने उनके खिलाफ दायर याचिका को सुनवाई के लिए स्वीकार कर लिया है। यह याचिका जंतर-मंतर पर प्रश्न पर लोक के मुद्दे को लेकर विरोध प्रदर्शन कर रहे विद्यार्थियों, उनके माता-पिता और युवाओं पर की गई टिप्पणियों के संबंध में दाखिल की गई है। मामले की गंभीरता को देखते हुए अदालत ने सुनवाई के लिए 21 अगस्त की तारीख मुकर्र की है, जिस दिन दोनों पक्षों की दलीलें सुनी जाएंगी।

जंतर-मंतर पर शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे, तब अभिनेत्री ने उन्हें गटर जनरेशन या गटर छाप करार दिया और उनके माता-पिता के खिलाफ भी अपमानजनक बातें कहीं। वकील ने इसे देश के युवाओं और छात्रों का सीधा अपमान बताया है। मामले की गंभीरता को देखते हुए अदालत ने सुनवाई के लिए 21 अगस्त की तारीख मुकर्र की है, जिस दिन दोनों पक्षों की दलीलें सुनी जाएंगी। याचिकाकर्ता ने यह भी स्पष्ट किया है कि यदि स्थानीय अदालत से इस मामले में राहत नहीं मिलती है, तो वह इस कानूनी लड़ाई को उच्च न्यायालय और जरूरत पड़ने पर देश के उच्चतम न्यायालय तक लेकर जाएंगे।

गलतान दास बगीची में गूंजी देशभक्ति की काव्य लहरें, कवियों ने टोंक के पर्यटन विकास का भी उठाया मुद्दा



महानगर मेट्रो ब्यूरो

टोंक। स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य में मां स्मृति संस्थान टोंक की ओर से संत कबीर आश्रम गलतान दास बगीची में ‘काव्य लहरें देश के नाम’ कार्यक्रम आयोजित किया गया। बारिश की बूंदबावंदी के बीच हुए इस काव्य आयोजन में देशभक्ति की कविताओं और गीतों ने माहौल को राष्ट्रप्रेम से भर दिया। कार्यक्रम के जरिए टोंक के दर्शनीय स्थलों को पर्यटन मानचित्र पर पहचान दिलाने और उनके विकास की ओर प्रशासन, पर्यटन विभाग, जनप्रतिनिधियों व आमजन का ध्यान आकर्षित करने का संदेश भी दिया गया। राष्ट्रीय कवि प्रदीप पंवार ने संचालन करते हुए कहा कि कविता सुनाना तो एक बहाना है, असल उद्देश्य टोंक के रमणीक स्थलों के प्रति लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने देशभक्ति गीतों से श्रोताओं में जोश भर दिया। गीतकार हनुमान बदामी ने सैनिकों को समर्पित गीत प्रस्तुत कर खूब

महानगर मेट्रो ब्यूरो

साल्हेवारा। हरियाली और प्रकृति संरक्षण के लोकपर्व हरेली के पावन अवसर पर साल्हेवारा तहसील क्षेत्र के कबीर आश्रम, आमगांवघाट में पर्यावरण संरक्षण एवं जनजागृति की भावना का ध्यान आकर्षित करने का संदेश भी दिया गया। राष्ट्रीय कवि प्रदीप पंवार ने संचालन करते हुए कहा कि कविता सुनाना तो एक बहाना है, असल उद्देश्य टोंक के रमणीक स्थलों के प्रति लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने देशभक्ति गीतों से श्रोताओं में जोश भर दिया। गीतकार हनुमान बदामी ने सैनिकों को समर्पित गीत प्रस्तुत कर खूब

दो किसानों को ले गए थे बांग्लादेशी-पलैग मीटिंग के बाद हुई रिहाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-बांग्लादेश अंतरराष्ट्रीय सीमा पर उस समय अचानक तनाव गहरा गया जब बांग्लादेशी ग्रामीणों ने सीमा पार कर दो भारतीय किसानों का अपहरण कर लिया। यह घटना पश्चिम बंगाल के नादिया जिले के सीमावर्ती इलाके में घटी, जहां खेत में काम कर रहे दो भारतीय किसानों को जबरन खींचकर बांग्लादेश ले जाया गया। हालांकि, दोनों देशों के सीमा सुरक्षा बलों के बीच तत्काल हुई उच्चस्तरीय प्लेग मीटिंग के बाद स्थिति को नियंत्रित कर लिया गया और आपसी सहमति से सभी नागरिकों को सुरक्षित रिहा करा लिया गया। विवाद की पूरी शुरुआत मंगलवार सुबह बांग्लादेश के मेहेरपुर स्थित इच्छाखाली बॉर्डर के पास हुई। स्थानीय रिपोर्टों के अनुसार, अब्दुल मजान नामक एक बांग्लादेशी किसान सीमावर्ती क्षेत्र में नियमों का उल्लंघन कर फसल पर कीटनाशक छिड़क रहा था, जिसके चलते भारतीय सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने उसे हिरासत में ले लिया था। इस कार्रवाई से आक्रोशित होकर दर्जनों बांग्लादेशी ग्रामीण भड़क उठे और सीमा पार कर भारतीय क्षेत्र में दाखिल हो गए। गुप्तसांग्र ग्रामीणों ने खेतों में काम कर रहे सचिन कर्मकार और नारायण देब नामक दो भारतीय किसानों को बीजीबी को सीप दिया, और इसके बदले में बांग्लादेशी ग्रामीणों द्वारा उठाए गए दोनों भारतीय किसानों को सुरक्षित वापस भारत के हवाले कर दिया गया। उल्लेखनीय है कि सीमा पार से भारतीय नागरिकों के अपहरण की इस क्षेत्र में हाल के दिनों में यह दूसरी बड़ी घटना है।

राहुल गांधी बोले- लेकर नहीं सुनना, पैलेट गन का आदेश दिया तो शाह इस्तीफा दें

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के सदन में चर्चा के आह्वान पर नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने तीखा पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि उन्हें कोई लेकर नहीं सुनना है। राहुल गांधी ने सवाल उठाया कि अगर छात्रों पर पैलेट गन चलाने का आदेश अमित शाह ने दिया था तो उन्हें इस्तीफा देना चाहिए।

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा, कि देश की युवा पीढ़ी अमित शाह के काल्पनिक भाषण सुनने में दिलचस्पी नहीं रखती। उन्होंने सरकार से सीधा सवाल करते हुए पूछा कि छात्रों पर बल प्रयोग का आदेश आखिर किसने दिया था। राहुल गांधी ने सवाल इस सवाल का स्पष्ट जवाब नहीं मिला, तब कथित तौर पर अंधा कर दिया गया और दूसरे छात्र को गोली मारी गई। उन्होंने यह भी पूछा कि छात्रों को कीलों वाली लाठियों से पीटने का आदेश किसने दिया था।

उनकी मांग है कि सरकार पहले यह स्पष्ट करे कि छात्रों के खिलाफ बल प्रयोग का आदेश किस स्तर से दिया गया था। उन्होंने कहा कि जब तक इस सवाल का स्पष्ट जवाब नहीं मिलता, तब तक किसी तरह का लेकर या सामान्य चर्चा स्वीकार नहीं की जाएगी। राहुल गांधी ने इस मुद्दे पर सरकार को घेरे हुए कार्रवाई के लिए जिम्मेदारी तय करने की मांग की। उन्होंने कहा कि यदि पैलेट गन चलाने का आदेश अमित शाह ने दिया था तो उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए।



स्वतंत्रता दिवस से पहले दिल्ली में हाई अलर्ट, रातभर चलाई जा रही सघन चेंकिंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्वतंत्रता दिवस से पहले पूरी दिल्ली को हाई अलर्ट पर रखा है। सुरक्षा में कोई चूक न हो, इसके लिए दिल्ली पुलिस ने राजधानी में देर रात मेगा सुरक्षा अभियान चलाया। रात 11 बजे से 2 बजे तक दिल्ली के तमाम जिलों में गश्त के साथ सघन चेंकिंग की गई। द्वारका मोड़ पर पुलिसकर्मियों ने पूरी सतर्कता के साथ आधी रात को पेट्रोलिंग की। अधिकारियों ने गाड़ियों की सघन जांच की और हर गुजरने वाली कार की अंदर-बाहर से अच्छी तरह तलाशी ली गई। सिर्फ सुरक्षा जांच में पास होने वाली गाड़ियों को ही आगे जाने की इजाजत दी गई।

फैल रहा वायब्रियो वल्निफिकस बैक्टीरिया, पाया जाता है समुद्री और खारे पानी में

-विशेषज्ञों ने टी चेतावनी- बैक्टीरिया गंभीर घाव का कारण बनकर हो सकता है जानलेवा

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका के कुछ तटीय इलाकों में इन दिनों समुद्र किनारे जाने वाले लोगों के लिए चेतावनी जारी की है। यहां वायब्रियो वल्निफिकस नामक एक खतरनाक बैक्टीरिया, जो गर्म समुद्री और खारे पानी में पाया जाता है। हाल के महीनों में इसके संक्रमण के मामलों में बढ़ोतरी दर्ज की गई है। अमेरिका के लुइसियाना राज्य में इस साल अब तक नौ लोग इसकी चपेट में आए हैं, जिनमें सभी को अस्पताल में भर्ती कराया गया, जबकि पांच लोगों की मौत हो चुकी है। गंभीर मामलों में यह बैक्टीरिया शरीर के ऊतकों को तेजी से नुकसान पहुंचा सकता है, इसलिए इसे आम बोलचाल में फ्ले-ड्रिंटिंग बैक्टीरिया यानी मांस को नुकसान तालियां बजाई। कार्यक्रम में संत प्रभुदास, युवा संत रूपदास और अध्यक्ष रोहित कुमावत का माल्यापण व दुशाला ओढ़कर स्वागत किया गया। समापन पर 'सब जन एक है' गीत के साथ भारत माता की जय के जयघोष हुए। आयोजकों ने टोंक के दर्शनीय स्थलों के विकास के लिए सरकार, जिला प्रशासन, पर्यटन विभाग, जनप्रतिनिधियों और आमजन से मिलकर प्रयास करने की अपील की।

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका के कुछ तटीय इलाकों में इन दिनों समुद्र किनारे जाने वाले लोगों के लिए चेतावनी जारी की है। यहां वायब्रियो वल्निफिकस नामक एक खतरनाक बैक्टीरिया, जो गर्म समुद्री और खारे पानी में पाया जाता है। हाल के महीनों में इसके संक्रमण के मामलों में बढ़ोतरी दर्ज की गई है। अमेरिका के लुइसियाना राज्य में इस साल अब तक नौ लोग इसकी चपेट में आए हैं, जिनमें सभी को अस्पताल में भर्ती कराया गया, जबकि पांच लोगों की मौत हो चुकी है। गंभीर मामलों में यह बैक्टीरिया शरीर के ऊतकों को तेजी से नुकसान पहुंचा सकता है, इसलिए इसे आम बोलचाल में फ्ले-ड्रिंटिंग बैक्टीरिया यानी मांस को नुकसान तालियां बजाई। कार्यक्रम में संत प्रभुदास, युवा संत रूपदास और अध्यक्ष रोहित कुमावत का माल्यापण व दुशाला ओढ़कर स्वागत किया गया। समापन पर 'सब जन एक है' गीत के साथ भारत माता की जय के जयघोष हुए। आयोजकों ने टोंक के दर्शनीय स्थलों के विकास के लिए सरकार, जिला प्रशासन, पर्यटन विभाग, जनप्रतिनिधियों और आमजन से मिलकर प्रयास करने की अपील की।

जहरियाली का संदेश लेकर कबीर आश्रम आमगांवघाट में हुआ वृक्षारोपण

नौव रखना है। वृक्ष हमें फल, छाया और प्राणवायु देने के साथ पक्षियों एवं जीव-जंतुओं को आश्रय भी प्रदान करते हैं। कबीर आश्रम आमगांवघाट जैसे आध्यात्मिक एवं सामाजिक स्थलों से पर्यावरण संरक्षण का संदेश जन-जन तक पहुंचना विशेष महत्व रखता है। संत कबीर की प्रकृति, सादगी और मानवता से जुड़ी विचारधारा को आत्मसात करते हुए प्रकृति की सेवा का भी समाज सेवा का ही एक रूप माना गया। वृक्षारोपण कार्यक्रम में राम जी ठाकरे, संतु धरमगढ़े, सुरेश झारिया, राजू दास साहेब (महंत), आशति बाई, लीला बाई पटेल, बालकुमारी, गंगा राम पटेल, उधो पटेल, प्रभु राम, जग्गू राम ठाकरे सहित बड़ी संख्या में कबीर पंथी जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम ने हरेली पर्व की परंपरा को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ते हुए यह संदेश दिया कि त्योहार केवल उत्सव मनाने का अवसर नहीं, बल्कि समाज और प्रकृति के प्रति अपने दायित्वों को निभाने का संकल्प लेने का भी अवसर है। कबीर आश्रम आमगांवघाट में रोपे गए ये पौधे आने वाले समय में हरियाली, शीतलता और जीवन का संदेश देते हुए इस आयोजन की स्मृति को जीवंत रखेंगे।

●●●●●

●●●●●

●●●●●



भारत की ये झीलें जन्नत

से नहीं है कम, इस गर्मी ट्रेवल
बकेट लिस्ट में करें शामिल

अगर आप भी इस गर्मी देश की फेमस और खूबसूरत
झीलों को देखने का मन बना रहे हैं, तो आज हम
आपको देश की कुछ अद्भुत और बेहद खूबसूरत झीलों
के बारे में बताने जा रहे हैं। जहां पर जाकर आप अपनी
छुट्टियों को खास बना सकते हैं।

गर्मियों के मौसम में लगभर हर कोई ठंडी जगहों या समुद्र तटीय
क्षेत्रों पर जाना ज्यादा पसंद करते हैं। इसके अलावा इस मौसम में
झीलों का नजारा भी देखने लायक होता है। ठंडी-ठंडी हवाओं के
बीच झीलों को देखना काफी ज्यादा अच्छा लगता है। ऐसे में अगर
आप भी इस गर्मी देश की फेमस और खूबसूरत झीलों को देखने का
मन बना रहे हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। क्योंकि आज इस
आर्टिकल के जरिए हम आपको देश की कुछ अद्भुत और बेहद
खूबसूरत झीलों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर जाकर आप
अपनी छुट्टियों को खास बना सकते हैं।

बड़ी लेक

राजस्थान के माउंट आबू में मीठे पानी की एक विशाल झील है।
इसको बड़ी लेक के नाम से भी जाना जाता है। गर्मियों में यहां का
नजारा बेहद खूबसूरत होता है। बताया जाता है कि बड़ी लेक को खुद
भगवान ने बनाया था। हर साल यहां पर बड़ी संख्या में लोग अपनी
छुट्टियों को यादगार बनाने के लिए आते हैं।

नैनी झील

नैनीताल के लोगों के लिए नैनी झील काफी ज्यादा फेमस है।
नैनी झील को नैनीताल झील के नाम से भी जाना जाता है। नैनी झील
में आप नौकायन यानी की नाव की सवारी का आनंद ले सकते हैं। हर
साल यहां पर देशी और विदेशी पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं।

हुसैन सागर झील

वहीं हैदराबाद में हुसैन सागर झील है, जोकि देखने में काफी
ज्यादा खूबसूरत लगती है। बताया जाता है कि इस हुसैन झील के तट
पर गोलकुंडा और मुगलों के बीच संधि हुई थी। इसके साथ ही इस
लेक में बुद्ध देवता की विशाल मूर्ति है। गर्मियों में हुसैन सागर झील
का नजारा देखने लायक होता है।

लोकटक झील

लोकटक झील मणिपुर में है और यह झील पर्यटकों के बीच
काफी ज्यादा फेमस है। इस झील को प्लोटिंग झील के नाम से भी
जाना जाता है। बताया जाता है कि लोकटक झील दुनिया की
इकलौती ऐसी लेक है, जोकि तैरती हुई दिखाई देती है। ऐसे में अगर
आप गर्मियों में मणिपुर जाने का प्लान बना रहे हैं, तो आपको एक
बार लोकटक झील देखने जरूर जाना चाहिए।

टारसर झील

बता दें कि जम्मू-कश्मीर में टारसर झील मौजूद है, जोकि
काफी ज्यादा खूबसूरत है। यह झील पर्वतीय इलाके में जमीन से
करीब 3,795 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। टारसर झील के
आसपास बड़े-बड़े पहाड़ हैं, जोकि दिखने में काफी ज्यादा खूबसूरत
लगते हैं।



प्रकृति, इतिहास और आध्यात्म का अद्भुत संगम है शिवपुरी

शिवपुरी का नाम भगवान शिव के नाम
पर पड़ा है। यह नगर कभी नरवर
रियासत का हिस्सा था और बाद में
ग्वालियर राज्य के अधीन आ गया।
सिंधिया राजवंश ने यहाँ कई महलों,
उद्यानों और स्मारकों का निर्माण
करवाया, जो आज भी उसकी राजसी
मय्यता की गवाही देते हैं।

शिवपुरी मध्य प्रदेश का एक सुरम्य और
ऐतिहासिक नगर है, जो अपनी हरियाली, प्राचीन
स्मारकों, राजसी विरासत और धार्मिक स्थलों के
लिए प्रसिद्ध है। यह नगर एक समय में सिंधिया
राजवंश की ग्रीष्मकालीन राजधानी रहा है और
आज यह पर्यटकों के लिए एक शांत, सुंदर और
विविध अनुभव प्रदान करता है।

शिवपुरी का ऐतिहासिक परिचय

शिवपुरी का नाम भगवान शिव के नाम पर पड़ा
है। यह नगर कभी नरवर रियासत का हिस्सा था
और बाद में ग्वालियर राज्य के अधीन आ गया।
सिंधिया राजवंश ने यहाँ कई महलों, उद्यानों और
स्मारकों का निर्माण करवाया, जो आज भी उसकी
राजसी भव्यता की गवाही देते हैं।

शिवपुरी के प्रमुख दर्शनीय स्थल

1. माधव राष्ट्रीय उद्यान

शिवपुरी का सबसे प्रसिद्ध स्थल। यह राष्ट्रीय

उद्यान कभी सिंधिया राजाओं का शिकार क्षेत्र हुआ
करता था। अब यह बाघ, तेंदुआ, चीतल, सांभर,
नीलगाय, मगरमच्छ, और अनेक पक्षियों का
निवास स्थान है। यह प्रकृति प्रेमियों और
वाइल्डलाइफ फोटोग्राफर्स के लिए स्वर्ग है।

2. सिंधिया की छतरियाँ

सिंधिया राजाओं और रानियों की याद में बने ये
संगमरमर के स्मारक भारतीय और मुगल
वास्तुकला के सुंदर मिश्रण का उदाहरण हैं। यहाँ
की कलाकृति, मेहराबों और जालीदार खिड़कियाँ
देखने योग्य हैं।

3. माधव विलास महल

यह एक भव्य शाही महल है, जहाँ सिंधिया
परिवार गर्मियों में रहा करता था। ऊँचाई पर स्थित
यह महल अपने बगीचों, झरोखों और शाही
वातावरण के लिए प्रसिद्ध है।

4. सागर तालाब और भदैया कुंड

शिवपुरी के यह जल स्रोत प्राकृतिक सौंदर्य के

साथ-साथ स्थानीय लोगों की आस्था से भी जुड़े हुए
हैं। यहाँ बैठकर आप शांति का अनुभव कर सकते
हैं।

5. नरवर किला

शिवपुरी से लगभग 40 किमी दूर स्थित यह
प्राचीन किला 10वीं शताब्दी में बना था और चंदेल,
परमार, तोमर, और मुगलों के अधीन रहा। किले से
आसपास का मनोरम दृश्य दिखाई देता है।

धार्मिक स्थल

सिद्धेश्वर महादेव मंदिर - एक प्राचीन शिव
मंदिर जो स्थानीय श्रद्धालुओं के बीच अत्यंत
पूजनीय है।

छत्री मंदिर परिसर - यहाँ भगवान विष्णु और
अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियाँ स्थापत्य कला का
अनोखा उदाहरण हैं।

व्या करें?

वन सफारी - माधव राष्ट्रीय उद्यान में सुबह या
शाम की सफारी जरूर लें।



फोटोग्राफी - प्रकृति, इतिहास और संस्कृति
का अद्भुत संगम आपको कैमरे से दूर नहीं रहने
देगा।

स्थानीय भोजन - यहाँ का पारंपरिक मालवी
और बुंदेली खाना जरूर चखें।

कैसे पहुँचें?
निकटतम रेलवे स्टेशन- शिवपुरी रेलवे
स्टेशन, ग्वालियर (110 किमी)

निकटतम हवाई अड्डा- ग्वालियर

सड़क मार्ग- ग्वालियर, झाँसी, भोपाल और
इंदौर से सड़क मार्ग द्वारा आसानी से पहुँचा जा
सकता है

ठहरने की व्यवस्था

शिवपुरी में मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा
संचालित रिसॉर्ट्स, लॉज और कई निजी होटल
उपलब्ध हैं। यदि आप प्रकृति के करीब रहना चाहते
हैं, तो माधव राष्ट्रीय उद्यान के पास रिसॉर्ट एक
बेहतरीन विकल्प हो सकते हैं।

यात्रा का सर्वोत्तम समय

अक्टूबर से मार्च के बीच का मौसम शिवपुरी
घूमने के लिए सबसे उपयुक्त है। इस समय तापमान
सुखद होता है और वन्यजीव भी अधिक दिखते हैं।

शिवपुरी एक ऐसा स्थल है जहाँ इतिहास के
पदचिह्न, राजसी भव्यता, प्राकृतिक सौंदर्य और
आध्यात्मिक शांति— सब एक साथ मिलते हैं। यह
पर्यटन के शोरगुल से दूर, आत्मिक और सुकून
भरी यात्रा के लिए आदर्श स्थल है। यदि आप मध्य
प्रदेश की अनदेखी विरासत को महसूस करना
चाहते हैं, तो शिवपुरी की यात्रा जरूर करें।

खूबसूरत तैमारा घाटी का खौफनाक रहस्य, यहां आते ही बदल जाता है मोबाइल का वक्ता



झारखंड की खूबसूरत जगहों के बीच
तैमारा घाटी के बारे में बहुत कम लोगों को
मालूम है। तैमारा घाटी झारखंड में %मौत

का हाइवे% के नाम से भी जाना जाता है।
ऐसे में आज हम आपको तैमारा घाटी की
डरावनी कहानियों के बारे में बताने जा रहे

हैं। झारखंड भारत का एक प्रमुख और
खूबसूरत राज्य है। यह राज्य साल 2000 में
बिहार से अलग होकर देश का 28वां राज्य

बना था। आज झारखंड पूरे भारत का एक
खनिज समृद्ध राज्य माना जाता है। झारखंड
घने जंगलों, कोयला खदानों और बेहतरीन
पर्यटन स्थलों के लिए जाना जाता है।
झारखंड की पतरानू घाटी, हुंडरू, टैगोर
हिल और दशम वॉटरफॉल, नेतरहाट और
तोपचांची झील जैसी खूबसूरत जगहों के बारे
में हर कोई जानता है।

इन खूबसूरत जगहों के बीच तैमारा घाटी
के बारे में बहुत कम लोगों को मालूम है।
तैमारा घाटी झारखंड में %मौत का हाइवे%
के नाम से भी जाना जाता है। ऐसे में आज इस
आर्टिकल के जरिए हम आपको तैमारा घाटी
की डरावनी कहानियों के बारे में बताने जा
रहे हैं।

तैमारा घाटी

तैमारा घाटी एक डरावनी जगह मानी
जाती है, जोकि रांची-जमशेदपुर हाइवे
यानी एनएच-33 पर है। यह जगह राजधानी
रांची से करीब 30 किमी की दूरी पर है।
हाइवे पर होने के कारण तैमारा घाटी को
%मौत का हाइवे% के नाम से भी जानी जाती

है। यह हाइवे घने जंगलों के बीच में है,
जिसकी वजह से यह काफी डरावना लगता
है।

तैमारा घाटी की घटनाएं

तैमारा घाटी की एक नहीं बल्कि कई
घटनाएं प्रचलित हैं। यह घाटी देखने में तो
काफी मनमोहक लगती है। लेकिन यह घाटी
कई मौतों की गवाह भी बन चुकी है। बताया
जाता है कि इस घाटी गुजरने पर टाइम और
तारीख अपने आप बदल जाती है।

तैमारा घाटी को लेकर एक अन्य कहानी
है कि जंगलों के बीच से जब गाड़ी गुजरती है,
तो उस गाड़ी की स्पीड मीटर खुद ब खुद
बदल जाती है। वहीं माना जाता है कि रात के
समय इस घाटी से अजीबो-गरीब आवाजें
आती रहती हैं। वहीं कुछ लोगों का मानना है
कि डर के कारण लोग रात में अकेले इस
घाटी से गुजरना नहीं चाहते हैं।

तैमारा घाटी की डरावनी कहानियां

इस घाटी की सबसे डरावनी कहानियों में
फेमस कहानी मोबाइल में डेट और समय का

बदल जाना है। कई लोगों का इस घाटी के
बारे में मानना है कि जब कोई यहां से गुजरता
है तो उसके मोबाइल में साल, डेट और समय
अपने आप बदल जाता है।

ऐसा होने के पीछे लोग कुछ और कहानी
भी बताते हैं। लोगों का मानना है कि तैमारा
घाटी से कुछ ही दूरी पर मेग्नेटाइज्ड रॉक है।
जिसकी वजह से यह समस्या होती है। वहीं
एक अन्य कारण यह भी है कि इसी घाटी से
कई रेखा गुजरती है, जिस वजह से यह
समस्या होती है।

तैमारा घाटी घूमने जाते हैं पर्यटक

बता दें कि झारखंड की राजधानी रांची
से करीब 30 किमी दूर स्थित तैमारा घाटी
अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता
है। यहां पर भीषण गर्मी में भी ठंडी-ठंडी
हवाएं चलती हैं। ऐसे में पर्यटक भी तैमारा
घाटी घूमने के लिए पहुंचते हैं। मानसून के
समय पर्यटक दूर-दूर से यहां पर लॉन्ग
झाड़ के लिए पहुंचते हैं। मानसून में इस
घाटी की खूबसूरती देखने लायक होती है।

भारत सितंबर में अफगानिस्तान से खेलेगा तीन मैचों की टी20 सीरीज; बांग्लादेश को क्यों लगा झटका!



मुंबई। भारतीय क्रिकेट टीम सितंबर में अफगानिस्तान के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज खेलेगी। बीसीसीआई और अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने बुधवार को संयुक्त बयान जारी कर सीरीज की घोषणा की। सीरीज के तीनों मुकाबले दिल्ली के अरुण जेटली क्रिकेट स्टेडियम में खेले जाएंगे। पहला टी20 13 सितंबर, दूसरा 15 सितंबर और तीसरा मुकाबला 17 सितंबर को होगा। यानी भारत और अफगानिस्तान के बीच पूरी टी20 सीरीज पांच दिनों के भीतर पूरी हो जाएगी। इस एलान के साथ ही बांग्लादेश की भारत के खिलाफ सितंबर में प्रस्तावित लंबे समय से लंबित सफेद गेंद की सीरीज की उम्मीदों को बड़ा झटका लगा है। भारत और बांग्लादेश के बीच द्विपक्षीय सीरीज

पिछले साल टल गई थी। बांग्लादेश में राजनीतिक अशांति के कारण दोनों टीमों के बीच प्रस्तावित सीरीज को स्थगित करना पड़ा था। इसके बाद बांग्लादेश ने सितंबर में भारत के खिलाफ सीरीज की मेजबानी का प्रस्ताव रखा था। हालांकि, अब सितंबर के लिए भारत का कार्यक्रम अफगानिस्तान के खिलाफ तय हो गया है। ऐसे में बांग्लादेश की उस सीरीज को लेकर उम्मीदें लगभग खत्म होती नजर आ रही हैं।

भारत और अफगानिस्तान के बीच होने वाली तीन मैचों की टी20 सीरीज के सभी मुकाबले एक ही मैदान पर खेले जाएंगे। अरुण जेटली क्रिकेट स्टेडियम को तीनों मैचों की मेजबानी मिलती है।

बीसीसीआई अध्यक्ष मिथुन मन्हास ने कहा कि बोर्ड

अफगानिस्तान में क्रिकेट के विकास को समर्थन देने और उसके खिलाड़ियों को उच्च स्तर पर खेलने के मौके देने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि द्विपक्षीय क्रिकेट टीमों को नियमित रूप से मजबूत विरोधी टीमों के खिलाफ खेलने और अनुभव हासिल करने का अवसर देता है। बीसीसीआई के मानद सचिव देवजीत सैकिया ने भी भारत-अफगानिस्तान क्रिकेट संबंधों को लेकर बात की। उन्होंने कहा कि दोनों टीमों के बीच पिछले कुछ वर्षों में नियमित द्विपक्षीय मुकाबले हुए हैं। सैकिया ने याद दिलाया कि भारत ने 2018 में अफगानिस्तान के ऐतिहासिक पहले टेस्ट की मेजबानी की थी। इसके बाद दोनों टीमों के बीच अलग-अलग फॉर्मेट में लगातार मुकाबले होते रहे हैं।

संक्षिप्त

समाचार

आईसीसी टेस्ट रैंकिंग: बाबर आजम की टॉप-10 में एंट्री



नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) द्वारा बुधवार को जारी टेस्ट बल्लेबाजों की रैंकिंग में पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने टॉप-10 में धमाकेदार एंट्री की है। बाबर को वेस्टइंडीज दौरे पर उनकी शानदार बल्लेबाजी का इनाम मिला है। वेस्टइंडीज दौरे पर 2 टेस्ट मैचों की 4 पारियों में 2 अर्धशतक की मदद से 193 रन बनाने वाले बाबर पांच स्थान की छलांग लगाते हुए आईसीसी की टेस्ट बल्लेबाजों की रैंकिंग में दसवें स्थान पर पहुंच गए हैं। शीर्ष 10 में बाबर एकमात्र पाकिस्तानी बल्लेबाज हैं। टेस्ट बल्लेबाजों की रैंकिंग में पहले स्थान पर ऑस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड, दूसरे स्थान पर इंग्लैंड के हैरी ब्रूक, तीसरे स्थान पर इंग्लैंड के जो रूट, चौथे स्थान पर ऑस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ, पांचवें स्थान पर दक्षिण अफ्रीका के टेंबा बानुमा, छठे स्थान पर श्रीलंका के कामिंडु मेसिंड, सातवें स्थान पर भारत के शुभमन गिल, आठवें स्थान पर न्यूजीलैंड के रचिन रवींद्र, और नौवें स्थान पर भारत के यशस्वी जायसवाल हैं। श्रीलंका के दिनेश चांदीमल एक स्थान नीचे खिसकते हुए टॉप-10 से बाहर हो गए हैं। वह 11वें वें स्थान पर हैं। टेस्ट गेंदबाजों की रैंकिंग में बहुत ज्यादा बदलाव नहीं हुआ है। शीर्ष 10 में भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह पहले, न्यूजीलैंड के मैट हेनरी दूसरे, ऑस्ट्रेलिया के मिचेल स्टार्क तीसरे, ऑस्ट्रेलिया के पैट कर्मिस चौथे, दक्षिण अफ्रीका के मार्को जानसेन पांचवें, ऑस्ट्रेलिया के स्कॉट बोले छठे, और दक्षिण अफ्रीका के कगिसो रबाडा सातवें स्थान पर हैं। रबाडा को एक स्थान का फायदा हुआ है। पाकिस्तान के नोमान अली एक स्थान के नुकसान के साथ सातवें स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलिया के जोश हेजलवुड नौवें और ऑस्ट्रेलिया के नाथन लियोन दसवें स्थान पर हैं।

टी20 सीरीज गंवाने के बावजूद पाकिस्तानी महिला खिलाड़ियों की रैंकिंग में सुधार

दुबई। आईसीसी ने ताजा महिला टी20 प्लेयर रैंकिंग जारी की है। भले ही पाकिस्तान ने हाल ही में श्रीलंका के खिलाफ टी20 सीरीज 1-2 से गंवाई, लेकिन इसके बावजूद नाशरा संधू, शवाल जुल्फकार और तुबा हसन की रैंकिंग में शानदार सुधार हुआ है। नाशरा संधू ने श्रीलंका के विरुद्ध तीसरे टी20 मैच में 17 रन देकर 1 विकेट हासिल किया था। संधू गेंदबाजों की रैंकिंग में एक स्थान ऊपर चढ़कर आठवें पयदान पर पहुंच गई हैं। बाएं हाथ की स्पिनर ने इस सीरीज में 3 विकेट लिए और 6.72 का शानदार इकॉनमी रेट बनाए रखा। दूसरी तरफ, तुबा हसन गेंदबाजी रैंकिंग में तीन स्थान की बढ़त के साथ 48वें नंबर पर पहुंच गई हैं। श्रीलंकाई टीम से, कप्तान चामरी अल्लुप्पु अपनी टीम की ऐतिहासिक सीरीज जीत में योगदान देने के बाद 5 स्थान ऊपर चढ़कर 36वें नंबर पर पहुंच गईं। श्रीलंका की महिला क्रिकेट टीम ने साल 2014 के बाद पहली बार पाकिस्तान के खिलाफ द्विपक्षीय टी20 सीरीज अपने नाम की है, जिसमें इमेशा दुलानी की बड़ी भूमिका रही, जिन्होंने शानदार प्रदर्शन करते हुए 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' अवॉर्ड जीता। दाएं हाथ की बल्लेबाज ने 61.50 की औसत से 123 रन बनाए और टी20 बल्लेबाजों की रैंकिंग में एक स्थान ऊपर चढ़कर 22वें नंबर पर पहुंच गईं। दुलानी ने 31 जुलाई को शुरुआती मैच में शानदार शुरुआत की और मेजबान टीम को छह विकेट और छह गेंदें शेष रहते हुए 177 रन का लक्ष्य हासिल करने में मदद की।

आखिरकार जॉर्जिना के हुए क्रिस्टियानो रोनाल्डो

10 साल से ज्यादा समय से साथ हैं

रोनाल्डो और जॉर्जिना का रिश्ता करीब एक दशक पुराना है। दोनों की मुलाकात 2016 में मैड्रिड में हुई थी। उस समय जॉर्जिना एक गुच्ची स्टोर में काम करती थीं। उन्होंने बाद में बताया था कि रोनाल्डो से पहली मुलाकात के दौरान उनके पेट में 'तितलियां उड़ने' जैसा एहसास हुआ था इसके बाद दोनों का रिश्ता धीरे-धीरे सार्वजनिक हुआ और दोनों ने एक साथ परिवार बसाया। रोनाल्डो के फुटबॉल करियर के स्पेन, इटली, इंग्लैंड और सऊदी अरब तक पहुंचने के दौरान जॉर्जिना लगातार उनके साथ रहीं।

2025 में हुई थी सगाई

शादी से करीब एक साल पहले जॉर्जिना ने अगस्त 2025 में सोशल मीडिया पर अपनी सगाई की जानकारी दी थी। उन्होंने रोनाल्डो के साथ हाथ की तस्वीर शेयर की थी, जिसमें उनकी बड़ी डायमंड रिंग नजर आई थी। उस पोस्ट में उन्होंने लिखा था, यस आई डू इन दिस एड इन ऑल माई लाइव्स।



गुजरात में लौटना चाहते थे हार्दिक... पर जीटी ने बंद किए वापसी के सभी रास्ते!

मुंबई। हार्दिक पांड्या का मुंबई इंडियंस के साथ भविष्य एक बार फिर सवालियों के घेरे में है। इसी बीच खबर है कि भारतीय ऑलराउंडर ने अपनी पुरानी फ्रेंचाइजी गुजरात टाइटंस में लौटने की कोशिश की थी। गुजरात भी उनकी वापसी के विचार के खिलाफ नहीं था, लेकिन कप्तानी को लेकर रखी गई पांड्या की मांग ने पूरी बातचीत को खत्म कर दिया।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, हार्दिक पांड्या ने अपनी पूर्व फ्रेंचाइजी गुजरात टाइटंस के साथ वापसी को लेकर बातचीत की थी। पांड्या और गुजरात, दोनों ही इस संभावना के लिए तैयार थे। इसके पीछे एक बड़ी वजह यह भी थी कि पांड्या ने गुजरात टाइटंस को 2022 में उसके पहले ही सीजन में आईपीएल चैंपियन बनाया था। हालांकि, वापसी के लिए पांड्या की एक अहम शर्त थी। वह चाहते थे कि गुजरात टाइटंस में लौटने के साथ उन्हें दोबारा टीम की कप्तानी भी सौंपी जाए।

कप्तानी की मांग बनी डील ब्रेकर

रिपोर्ट के मुताबिक, हार्दिक की कप्तानी की मांग पर गुजरात टाइटंस ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। फ्रेंचाइजी ने मौजूदा कप्तान शुभमन गिल से भी इस संभावित बदलाव को लेकर बात की थी। गिल इस बात के लिए तैयार बताए गए कि फ्रेंचाइजी हार्दिक को वापस ट्रेड कर सकती है। लेकिन जब पांड्या की ओर से कप्तानी को वापसी की शर्त के तौर पर रखा गया, तो गुजरात टाइटंस ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। 'फ्रेंचाइजी उनके लौटने के पक्ष में थी। उन्होंने अपने कप्तान शुभमन गिल से भी इस बारे में बात की थी और वह भी इसके लिए तैयार थे। लेकिन जब कप्तानी की शर्त सामने आई, तो सभी ने इसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया।'

मुंबई इंडियंस में भी भविष्य पर सवाल

हार्दिक की गुजरात में वापसी की कोशिश ऐसे समय में सामने आई है, जब मुंबई इंडियंस में उनके भविष्य को लेकर भी अनिश्चितता बनी हुई है। पांच बार की चैंपियन मुंबई इंडियंस का 2026 आईपीएल सीजन निराशाजनक रहा। टीम ने 14 में से सिर्फ चार मैच जीते और अंक तालिका में नौवें स्थान पर रही। पांड्या का मुंबई के प्रशंसकों के साथ रिश्ता भी उतार-चढ़ाव भरा रहा है। उन्होंने 2021 सीजन के बाद मुंबई का साथ छोड़ा था और 2024 में टीम में वापसी की। वापसी के बाद उन्हें रोहित शर्मा की जगह कप्तान बनाया

गया था। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मुंबई इंडियंस का टीम मैनेजमेंट पांड्या को कप्तान के तौर पर बनाए रखने को लेकर उत्सुक नहीं था। खराब सीजन के बाद टीम में उनकी भूमिका को लेकर भी विचार किया जा रहा था। इसके अलावा कोलकाता नाइट राइडर्स और चेन्नई सुपर किंग्स समेत कई फ्रेंचाइजी ने हार्दिक पांड्या को लेकर मुंबई इंडियंस से पूछताछ की है।

पांड्या के प्रवक्ताने क्या कहा

हालांकि, हार्दिक पांड्या के प्रवक्ताने इन खबरों पर अलग रुख रखा है। उन्होंने कहा कि ऑलराउंडर ने ट्रांसफर या ट्रेड को लेकर किसी भी फ्रेंचाइजी से सीधे बातचीत नहीं की है। प्रवक्ताने के मुताबिक, 'हार्दिक पांड्या ने ट्रांसफर, ट्रेड या किसी अन्य तरीके से किसी भी फ्रेंचाइजी से सीधे बातचीत नहीं की। अगर उनसे कोई संपर्क किया गया है, तो वह मुंबई इंडियंस फ्रेंचाइजी के जरिए किया गया है।' इस तरह गुजरात टाइटंस में वापसी की चर्चा के बावजूद कप्तानी की शर्त के कारण यह संभावित डील आगे नहीं बढ़ सकी।

संन्यास के बावजूद श्रीलंका दौरे पर क्यों गए अजिंक्य रहाणे



कोलंबो। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान अजिंक्य रहाणे अब मैदान के अंदर नहीं, बल्कि कमेंट्री बॉक्स से टेस्ट क्रिकेट का अनुभव साझा करते नजर आएंगे। रहाणे भारत के आगामी श्रीलंका दौरे पर टेस्ट कमेंट्री में डेब्यू करने वाले हैं। भारत और श्रीलंका के बीच दो टेस्ट मैचों की सीरीज 15 अगस्त से शुरू होगी और इसी सीरीज के साथ रहाणे कमेंट्री की दुनिया में अपनी नई पारी शुरू करेंगे। वह ऑफिशियल ब्रॉडकास्टर के कमेंट्री पैनल का हिस्सा होंगे। रहाणे का यह कदम उनके करीब 18 साल लंबे फर्स्ट क्लास करियर के खत्म होने के कुछ ही समय बाद आया है। अपने करियर के बड़े हिस्से में उन्होंने टेस्ट क्रिकेट के मुश्किल माहौल में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया। अब 37 साल की उम्र में रहाणे पांच दिन तक चलने वाले टेस्ट मैच को एक खिलाड़ी के बजाय कमेंटरेटर के नजरिए से देखेंगे। वह मैच के दौरान रणनीतिक फैसलों, महत्वपूर्ण पलों और मुकाबले की दिशा बदलने वाले घटनाक्रम का विश्लेषण करेंगे। रहाणे ने भारत के लिए 85 टेस्ट मैच खेले और इस दौरान 5,077 रन बनाए। उनके नाम 12 शतक और 26 अर्धशतक हैं। अलग-अलग परिस्थितियों में टेस्ट क्रिकेट खेलने और दबाव के बीच प्रदर्शन करने का उनका अनुभव कमेंट्री के दौरान उनके लिए अहम साबित हो सकता है। मैदान पर लंबे समय तक खेलने के बाद अब वह अपने अनुभव के जरिए दर्शकों को टेस्ट क्रिकेट की बारीकियां समझाने की कोशिश करेंगे।

पांड्या ने ऐसी क्या रख दी थी मांग?

कई टीमों ने हार्दिक में दिखाई दिलचस्पी



भारत के खिलाफ पहले टेस्ट के लिए श्रीलंकाई टीम घोषित

कोलंबो। भारत के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज के पहले टेस्ट के लिए श्रीलंकाई टीम का एलान हो गया है। श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड ने मैच के लिए 16 सदस्यीय टीम का एलान किया है। विकेटकीपर-बल्लेबाज निरोसन डिकवेल्ला करीब तीन साल बाद श्रीलंका की टेस्ट टीम में लौटे हैं। 33 वर्षीय डिकवेल्ला ने पिछली बार 2023 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेला था। पहला टेस्ट 15 अगस्त से खेला जाएगा। वहीं, दूसरा टेस्ट 23 अगस्त से कोलंबो में खेला जाएगा। श्रीलंका के रवींद्र में अनेकपड ऑफ स्पिनर केशरा नुवांथा और अनेकपड टॉप ऑर्डर बल्लेबाज पसिंदु सुरियाबंदर को भी जगह मिली है। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज दिलशान मधुरंश का भी टीम में वापसी हुई है, जिन्होंने अब तक सिर्फ एक टेस्ट खेला है। वहीं, कुसल मेडिस और पाथुम निंसांका फिलहाल पहले टेस्ट से बाहर हो गए हैं। डिकवेल्ला की वापसी की सबसे बड़ी वजह कुसल मेडिस का टीम से बाहर होना है। मेडिस हेमरिस्टिंग चोट के कारण चयन के लिए उपलब्ध नहीं हैं। वहीं पाथुम निंसांका भी कलाई की सर्जरी से उबर रहे हैं और टीम में नहीं हैं।



बांग्लादेश के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया की प्लेइंग-11 घोषित



जार्जिन। ऑस्ट्रेलिया गुरुवार से बांग्लादेश के खिलाफ जार्जिन में शुरू होने वाली दो टेस्ट मैच की सीरीज से एक साल में 20 टेस्ट मैच खेलने के अपने व्यस्त कार्यक्रम की शुरुआत करेगा। इस मैच से 2003 के बाद टेस्ट क्रिकेट की ऑस्ट्रेलिया के उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में वापसी भी होगी। बांग्लादेश का दो दशकों से अधिक समय में ऑस्ट्रेलिया का यह पहला टेस्ट दौरा है। ऑस्ट्रेलिया ने पहले टेस्ट के लिए प्लेइंग-11 घोषित कर दी है। ऑस्ट्रेलिया का अगले 12 महीने का कार्यक्रम बेहद व्यस्त है। इस दौरान वह 20 टेस्ट मैच खेलेगा, जिसमें विश्व टेस्ट चैंपियन दक्षिण अफ्रीका, भारत और इंग्लैंड के दौरे भी शामिल हैं। अगर वह विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में पहुंचता है तो इन मैच की संख्या 21 हो जाएगी। बांग्लादेश के खिलाफ दूसरे टेस्ट के बाद ऑस्ट्रेलिया तीन टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए दक्षिण अफ्रीका का दौरा करेगा। इसके बाद वह चार टेस्ट मैच के लिए न्यूजीलैंड की मेजबानी करेगा। ऑस्ट्रेलिया को इसके बाद भारत में पांच टेस्ट मैचों की सीरीज खेलनी है। वह मार्च में मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में इंग्लैंड के खिलाफ एक टेस्ट मैच खेलेगा जो दोनों देशों के बीच टेस्ट मैचों की 150वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित किया जाएगा।

मैं अपनी एक्टिंग जर्नी को लेकर बहुत खुश हूं, मुझे इस पर गर्व है



खुशाली कुमार ने कहा- जब लोग मुझे गुलशन जी की बेटी बोलते हैं तो बहुत अच्छा लगता है। उन्होंने कहा कि मुझे बचपन से मम्मी की साड़ी काटकर ड्रेस बनाने का शौक भी था तो उन्हें लगा कि मैं उस पेशे में अच्छा करूंगी। उन्होंने कहा- जब हमने पापा को खोया, मेरा भाई भूषण कुमार तब बहुत ही कम उम्र था। वो मुश्किल से 18 साल का था तो इतने बड़े साम्राज्य का बोझ संभालना आसान नहीं। 'मुझे बहुत गर्व है कि मैं अपने पापा (गुलशन कुमार) की बेटी हूँ। जब लोग मुझे गुलशन जी की बेटी बोलते हैं तो बहुत अच्छा लगता है। हम तीनों भाई-बहन यही चाहते हैं कि हम अपने पापा के नाम से जाने जाएँ।' यह कहना है भारतीय म्यूजिक इंडस्ट्री में क्रांति लाने वाले निर्माता स्वर्गीय गुलशन कुमार की बेटी खुशाली कुमार का। करीब 30 साल पहले एक दुर्भाग्यपूर्ण वारदात में जान गंवाने वाले गुलशन कुमार के तीनों बच्चे- भूषण कुमार, तुलसी कुमार और खुशाली कुमार, अपने-अपने क्षेत्र में नाम कमा रहे हैं। भूषण फिल्म निर्माता हैं, तुलसी सिंगर हैं और खुशाली एक्टिंग में नाम कमा रही हैं। इन दिनों वह अपनी फिल्म 'दुल्हनिया ले आएंगी' को लेकर चर्चा में हैं।

बातचीत में खुशाली ने हमसे अपने पिता की विरासत को आगे बढ़ाने और एक्टिंग करियर में देरी से एंट्री पर बेबाक और बेहद भावुक बातचीत की। जिस तरह बड़े पेड़ के नीचे छोटे पौधे ठीक से पनप नहीं पाते, उसी तरह अक्सर देखा जाता है कि मशहूर भाई-बहन की छांव तले छोटे को अपनी जगह बनाने के लिए ज्यादा संघर्ष करना पड़ता है। ऐसे में, 'पापा गुलशन कुमार की बनाई फिल्मी विरासत और मशहूर निर्माता भाई भूषण कुमार और गायिका बहन तुलसी कुमार की प्रसिद्धि के चलते खुशाली को किस तरह की चुनौती का सामना करना पड़ा? इस सवाल पर उन्होंने कहा, पहले तो मुझे अपने पापा की बेटी होने पर बहुत गर्व है। मैं चाहती हूँ कि मेरे पापा का नाम आने वाली पीढ़ियां याद रखें, क्योंकि उन्होंने धर्म से लेकर म्यूजिक, समाज सबके लिए इतना कुछ किया है। उन्होंने म्यूजिक को आम आदमी तक पहुंचाया है तो मैं चाहती हूँ कि हर कोई उन्हें याद रखे। दूसरे, मेरा मानना है कि एक एक्टर के तौर पर मेरा सफर बहुत खूबसूरती से आगे बढ़ रहा है। लोग मेरी जर्नी पहली फिल्म धोखा: राउंड द कॉर्नर से यहां तक देख रहे हैं लेकिन मैं अपना सफर वहां से देख रही

हूँ जब एक छोटी बच्ची ने एक्टर बनने का सपना देखा था और आज मैं फिल्में कर रही हूँ तो यह मेरे लिए बहुत स्पेशल है। मैं अपनी जर्नी को लेकर बहुत खुश हूँ। मुझे इस पर गर्व है।' खुशाली ने एक्टिंग में कदम थोड़ी देरी से रखा। इसकी वजह पूछने पर उन्होंने बताया, 'जब आप एक्टर बनने के लिए घरवालों को बोलते हैं तो इतनी जल्दी सपोर्ट नहीं मिलता है। मेरे पापा बहुत सपोर्टिव थे। वह बहुत दबंग थे, मगर मेरी मम्मी बहुत सारी चीजों में थोड़ी कंजर्वेटिव थीं। फिर पापा के गुजरने के बाद उनकी यह सोच हमें प्रोटेक्ट करने के लिए ज्यादा थी कि मुंबई जैसी जगह में मैं अकेली हूँ। मेरे तीन बच्चे हैं तो ऐसी कोई चीज न करें जो कैमरे के सामने हो। उनको लगा कि मेरे लिए फैशन डिजाइनिंग ज्यादा सुरक्षित विकल्प है। मुझे बचपन से मम्मी की साड़ी काटकर ड्रेस बनाने का शौक भी था तो उन्हें लगा कि मैं उस पेशे में अच्छा करूंगी और मैंने काफी हद तक अच्छा किया भी। मैंने डिजाइनिंग की। बहुत सारे अंतरराष्ट्रीय स्टोर पर मेरे अपने नाम से कपड़े बिक रहे थे। विदेशों में 30 से 40 स्टोर थे जहां मैं रीटेल कर रही थी लेकिन मैं कभी भी खुश नहीं थी। मेरी खुशी हमेशा कैमरे के आगे

थी लेकिन जब हमने पापा को खोया, मेरा भाई (भूषण कुमार) तब बहुत ही कम उम्र था। वो मुश्किल से 18 साल का था तो इतने बड़े साम्राज्य का बोझ संभालना आसान नहीं होता। अपनी फिल्म दुल्हनिया ले आएंगी में 50 से भी ज्यादा दूल्हों को रिजेक्ट करने वाली खुशाली से हमने जब इसके बारे में पूछा तो उनका कहना था, 'आज के समय में एक सही दूल्हा मिलना आसान नहीं होता। उसे ढूँढ़ने में बहुत मुश्किल होती है। आजकल हम लड़कियों की चेकलिस्ट भी बढ़ती जा रही है, मगर मेरा मानना है कि आपकी वो चेकलिस्ट पूरी हो जाए तो चट मंगनी पट ब्याह कर लेना चाहिए।' ऐसे में, खुशाली की अपने पार्टनर के लिए क्या चेकलिस्ट है? इस पर वह कहती हैं, 'मेरे लिए सबसे पहली चीज है कनेक्ट। वो बहुत जरूरी है। अगर वह कनेक्शन हो तो इसान में कमियां भी हों तो वो आपको नहीं दिखेगी। वह कनेक्ट ऐसा होता है कि लगता है कि हम उस इसान को बहुत सालों से जानते हैं। जैसे हम अपनी मम्मी या भाई-बहन के साथ रहते हैं, जब वैसा ही कॉफर्ट अपने पार्टनर के साथ मिले तभी एक लड़की अपने परिवार को छोड़कर उसके साथ जिंदगी बिताने का फैसला कर पाती है।



यश की 'टॉक्सिक' फिल्म देखने को बेकरार ऋषभ शेट्टी

बीते दिन शनिवार को फिल्म 'टॉक्सिक' के ट्रेलर से पर्दा हटा। बंगलुरु में आयोजित एक शानदार इवेंट में ट्रेलर रिलीज किया गया, जहां फिल्म की पूरी स्टारकास्ट भी मौजूद रही। ट्रेलर को अच्छा रैस्पॉन्स मिल रहा है। इस बीच 'कांतारा' फेम एक्टर ऋषभ शेट्टी ने भी 'टॉक्सिक' के ट्रेलर पर प्रतिक्रिया दी है।

ऋषभ शेट्टी ने क्या कहा

ऋषभ शेट्टी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से एक पोस्ट शेयर किया है। उन्होंने फिल्म का पोस्ट शेयर करते हुए ट्रेलर की तारीफ की है। साथ ही फिल्म को लेकर भी उत्पुकता जताई है। ऋषभ ने लिखा है, 'राया की दुनिया में यह एक बेहतरीन निमंत्रण है।'। आगे कहा, 'यह पक्का है कि शानदार परफॉर्मेंस की मजबूत नींव के साथ यश का यह सफर एक्शन से भरपूर और एंटरटेनिंग होगा।'। ऋषभ ने लिखा है, 'यश सर, आपको इस फिल्म में बड़े पर्दे पर देखने का इंतजार है। उन्होंने टॉक्सिक की पूरी टीम, निर्देशक गीतू मोहनदास और केवीएन प्रोडक्शंस को भी शुभकामनाएं दीं।

कब रिलीज होगी 'टॉक्सिक'

फिल्म 'टॉक्सिक' 28 अगस्त 2026 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। यह फिल्म पहले इसी साल 19 मार्च 2026 को रिलीज होने वाली थी। तब इसका मुकाबला बॉक्स ऑफिस पर 'धुरंधर 2' से होता। हालांकि, बाद में यश की फिल्म की रिलीज डेट आगे बढ़ा दी गई। फिर इसे जून में रिलीज किए जाने की तैयारी थी। मगर, ऐसा नहीं हुआ। अब आखिर अगस्त में फिल्म बड़े पर्दे पर दस्तक देने को तैयार है।

ऋषभ शेट्टी की आगामी फिल्में

ऋषभ शेट्टी के वर्क फ्रंट की बात करें तो वे 'कांतारा-2' में नजर आएंगे। इसके अलावा प्रशांत वर्मा के निर्देशन में बनने वाली 'जय हनुमान' भी झोली में है। साथ ही ऋषभ ऐतिहासिक ड्रामा फिल्म 'भारत का गौरव- छत्रपति शिवाजी महाराज' शामिल हैं। वे इसमें लीड रोल करने वाले हैं।



'लॉक अप 2' विनर श्रेया कालरा ने बिग 'बॉस 20' के लिए मना किया

श्रेया कालरा, जो हाल ही में रियलिटी शो 'लॉक अप' की विजेता बनी हैं। वह अभी किसी रियलिटी शो में हिस्सा लेने में दिलचस्पी नहीं रख रही हैं। श्रेया ने अपने इंस्टाग्राम पर साफ किया कि वह अभी कंटेस्टेंट के तौर पर किसी रियलिटी शो का हिस्सा नहीं बनना चाहती हैं। इससे पहले इस बात को लेकर अफवाहें चल रही थी कि श्रेया कालरा बिग बॉस 20 में दिखेंगी।

किसी भी रियलिटी शो का हिस्सा नहीं बनेंगी श्रेया?

श्रेया कालरा ने कहा 'देस्तों, जो मुझसे पूछ रहे हैं कि मैं बिग बॉस जाऊंगी या नहीं, उन्हें बता दू कि मैं अभी-अभी एक पागलखाने से बाहर आई हूँ। मैं अभी कंटेस्टेंट के तौर पर कोई रियलिटी शो करने का प्लान नहीं बना रही हूँ। क्योंकि वह मानसिक रूप से बहुत थकाने वाला और मुश्किल था। इसलिए मेरे लिए बिग बॉस नहीं, लेकिन अगर होस्ट करने, मेटर बनने या गैंग लीडर बनने का मौका मिले, तो मैं जरूर उत्साहित होऊंगी। अगर ऐसा कुछ हुआ तो मुजा आ जाएगा। लेकिन कंटेस्टेंट? नहीं भाई, यह सब झेलना बहुत मुश्किल है।'

पब्लिसिटी के लिए नहीं की थी गौरव खन्ना से तलाक वाली बात

राज सामने आने पर हंगामा खड़ा हो गया। इसी बारे में हाल ही में 'लॉकअप 2' से बाहर आने के बाद आकांक्षा चमोला ने बात की। उन्होंने बताया कि परिवार उनसे काफी नाराज है। जब शो 'लॉकअप 2' से आकांक्षा चमोला बाहर हुई थी तो उनसे अभिनेत्री तेजस्वी प्रकाश ने सवाल-जवाब किए थे। यह शो का ही कॉन्सेप्ट था, जिसमें तेजस्वी प्रतियोगी से कई सवाल पूछती हैं। तेजस्वी से बातचीत के दौरान ही आकांक्षा ने कहा, 'जब गौरव खन्ना शो में आए थे तो उन्होंने परिवार के बारे में कुछ ऐसा बताया था जो कि परेशान होने वाली बात थी। तलाक की बात तो परिवार को पता थी। लेकिन लड़कियों की तरफ आकर्षित होने वाली बात को लेकर वे ओके नहीं हैं।' शो से बाहर आने के बाद आकांक्षा ने बताया कि

कुछ दिन पहले ट्रॉफी जीतने के बाद एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बात करते हुए, कालरा ने अपनी जीत उन लोगों को समर्पित की जो कॉम्पिटिशन के दौरान उनके साथ खड़े रहे। उन्होंने अपने बॉयफ्रेंड ऋषभ जायसवाल और साथी कंटेस्टेंट शिल्पा शिंदे और माधुरी ग्रोवर का शुक्रिया अदा किया। उन्होंने कहा कि जहां ट्रॉफी उनके सपोर्टर्स की है, वहीं 1 करोड़ रुपये की प्राइज मनी का इस्तेमाल प्रैक्टिकल कामों में किया जाएगा।

आलोचना पर बोलीं श्रेया

उनकी जीत पर सवाल उठाने वालों की आलोचना का जवाब देते हुए, कालरा अपनी बात पर अडिग रहीं। उन्होंने कहा 'मुझे पता है कि मैं इसकी हकदार हूँ। मैंने शो में जो कुछ भी दिया, वह मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक रूप से दिया। मैं इस ट्रॉफी और प्राइज मनी की हकदार हूँ। कोई क्या कहता है, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। आप हर किसी की कहानी में हीरो नहीं हो सकते। मुझे पता है कि मैं अपनी कहानी की हीरोइन हूँ। अगर कोई मुझे विलेन कहता है, तो मैं उसे स्वीकार करूंगी।'



शो 'लॉकअप 2' में आते ही आकांक्षा चमोला ने बताया कि वह टीवी अभिनेता गौरव खन्ना से तलाक ले रही हैं। आगे चलकर उन्होंने कहा कि वह लड़कियों के प्रति भी आकर्षित रहती हैं। अभिनेत्री का यह

पहली बार टाइगर श्रॉफ के साथ स्क्रीन शेयर करेंगी नुसरत भरुचा

अभिनेता टाइगर श्रॉफ और निर्देशक-कोरियोग्राफर रेमो डिझूजा एक बार फिर एक हाई-ऑक्टन एक्शन एंटरटेनर के लिए साथ आ रहे हैं। इस बहुप्रतीक्षित फिल्म की स्टारकास्ट में अब एक और बड़ा नाम जुड़ गया है और वो नाम है फैशन दीवा नुसरत भरुचा का, जो फिल्म में एक प्रमुख किरदार निभाती नजर आएंगी। पहली बार टाइगर श्रॉफ के साथ स्क्रीन शेयर करेंगी नुसरत फिल्म से जुड़े एक सूत्र के अनुसार, निर्माता ऐसी अभिनेत्री की तलाश में थे जो अपने किरदार में मजबूती के साथ भावनात्मक गहराई भी ला सके और नुसरत भरुचा इस भूमिका के लिए उनकी पहली पसंद साबित हुईं। सूत्र ने बताया, 'टीम ऐसे कलाकार की तलाश में थी जो कहानी में मजबूती और भावनात्मक गहराई दोनों ला सके। नुसरत शुरू से

ही सबसे मजबूत विकल्पों में थीं। फिलहाल इस फिल्म में उनका किरदार बेहद प्रभावशाली है और दर्शक उन्हें बिल्कुल नए अंदाज में देखेंगे।' हालांकि निर्माताओं ने अभी तक उनके किरदार का खुलासा नहीं किया है, लेकिन सूत्रों का कहना है कि नुसरत की भूमिका कहानी का अहम हिस्सा होगी और वह पारंपरिक हीरोइन से कहीं आगे जाकर कहानी को नई दिशा देती नजर आएंगी। यह पहली बार होगा जब टाइगर श्रॉफ और नुसरत भरुचा किसी फिल्म में साथ स्क्रीन शेयर करेंगे। वहीं, टाइगर और रेमो डिझूजा लगभग एक दशक बाद फिर से साथ काम कर रहे हैं। इससे पहले दोनों ने 2016 में रिलीज हुई सुपरहीरो फिल्म 'ए फ्लाइंग जट्ट' में साथ काम किया था।



इंडियन फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न में दिखाई जाएगी फिल्म 'बयान'

बॉलीवुड की बेहतरीन अभिनेत्री हुमा कुरैशी अपनी अपकमिंग फिल्म 'टॉक्सिक' को लेकर चर्चा में हैं। इस बीच खबर है कि उनकी फिल्म 'बयान' ऑस्ट्रेलिया में होने वाले इंडियन फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न में दिखाई जाएगी।

हुमा ने जाहिर किया उत्साह

हुमा कुरैशी ने प्रीमियर से पहले इसे लेकर अपना उत्साह जाहिर किया है। विकास रंजन मिश्रा की लिखी और डायरेक्ट की गई यह दिलचस्प हिंदी फिल्म, फेस्टिवल की ऑफिशियल लाइनअप का हिस्सा होगी। यह मेलबर्न के दर्शकों को साल की सबसे दिलचस्प कहानियों में से एक दिखाएगी। फिल्म के ऑस्ट्रेलियन प्रीमियर के बारे में बात करते हुए हुमा कुरैशी ने कहा, 'बयान' उन सबसे चुनौतीपूर्ण और भावनात्मक रूप से संतोषजनक फिल्मों में से एक है, जिसका हिस्सा बनने

का मुझे मौका मिला है।' एक्ट्रेस ने अपने किरदार के बारे में कहा, 'रूही एक ऐसी महिला है जो भारी दबाव के बावजूद अपनी बात पर अडिग रहती है, और उसके सफर को निभाने ने एक एक्टर के तौर पर मुझे कई तरह से आगे बढ़ाया। जिस चीज ने मुझे इस फिल्म की ओर आकर्षित किया, वह सिर्फ इसकी दिलचस्प जांच ही नहीं थी, बल्कि सत्ता, सच्चाई और न्याय के बारे में उठाए गए सवाल भी थे।'

हुमा को इस बात को लेकर है गर्व

उन्होंने फिल्म के प्रीमियर को लेकर कहा, 'मुझे बहुत गर्व है कि 'बयान' को इंडियन फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न में दिखाया जाएगा, एक ऐसा फेस्टिवल जिसने हमेशा सार्थक सिनेमा को सराहा है। मुझे उम्मीद है कि दर्शक फिल्म से जुड़ेंगे। इसकी चर्चाओं में शामिल होंगे। दर्शक लंबे समय तक सोचने के लिए थिएटर से कुछ लेकर निकलेंगे।'

वया ट्रंप बच्चों का जीवन खतरे में डाल रहे टीकाकरण पर लिया बड़ा फैसला, विरोध भी शुरू

वाॅशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बच्चों के टीकाकरण को लेकर बड़ा कार्यकारी आदेश जारी किया है। इस आदेश में बचपन में लगाए जाने वाले टीकों की सिफारिशों को नए तरीके से तैयार करने की बात कही गई है। ट्रंप लंबे समय से इस विचार की समर्थन करते रहे हैं कि बच्चों को एक साथ कई टीके देने के बजाय उन्हें अलग-अलग चिकित्सकीय दौरो में लगाया जाना चाहिए। इसी सोच के तहत अब खसरा, गलसुआ और रूबेला यानी एमएमआर के टीके को भी तीन अलग-अलग टीकों के रूप में देने की योजना बनाने का निर्देश दिया गया है। इस फैसले को लेकर अमेरिका में स्वास्थ्य विशेषज्ञों और प्रशासन के बीच बहस तेज हो गई है।

ट्रंप के आदेश में आखिर क्या बदलेगा : ट्रंप के आदेश में कहा गया है कि बच्चों को लगने वाले टीकों को जहां संभव हो, अलग-अलग चिकित्सकीय मुलाकातों में दिया जाए। एमएमआर टीके को तीन अलग-अलग टीकों में बांटने की योजना बनाने का भी निर्देश दिया गया है। अमेरिका में फिलहाल खसरा, गलसुआ और रूबेला के टीके लिए अलग-अलग टीका उपलब्ध नहीं है। आदेश में अमेरिकी स्वास्थ्य विभाग को टीकों पर शोध बेहतर करने और अलग-अलग एमएमआर टीके उपलब्ध कराने की योजना तैयार करने को कहा गया है। ट्रंप ने

कियूसम हैदरी को डिप्टी चीफ ऑफ स्टॉफ नियुक्त किया गया है।

वहीं, अहमद वाहिदी को लेफ्टिनेंट जनरल के पद के साथ आईआरजीसी का कमांडर-इन-चीफ नियुक्त किया गया है। मुस्त्फा इजादी को आईआरजीसी का डिप्टी कमांडर-इन-चीफ बनाया गया है। अली अजमाई को आईआरजीसी की नौसेना का कमांडर नियुक्त किया गया है, जबकि होसेन ताएब को बसीज रेंजिस्टेंस फोर्स का प्रमुख बनाया गया है।

इरानी विदेश मंत्रालय ने की अमेरिकी प्रतिबंधों की आलोचना : इरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बघाई ने मंगलवार को अमेरिका की प्रतिबंध नीति की आलोचना की। उन्होंने अमेरिकी प्रशासन पर आर्थिक प्रतिबंधों की ‘लत’ होने का आरोप लगाया। यह

बयान अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट की उस कथित टिप्पणी के बाद आया, जिसमें उन्होंने कहा था कि प्रतिबंध इरान का ‘दम घोट’ रहे हैं।

बघाई ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि बार-बार प्रतिबंधों का इस्तेमाल यह दिखाता है कि अमेरिका कूटनीति के जरिये आगे बढ़ने में सक्षम नहीं है। उन्होंने कहा, अमेरिकी वित्त मंत्री ने आर्थिक प्रतिबंधों के जरिये इरान का ‘दम घोटने’ की बात पर गर्व जताया है। इस दावे में दिखने वाली बेवसी से नियुक्तियों की घोषणा की। अली अब्दोल्लाही को सशस्त्र बलों के चीफ ऑफ स्टॉफ बनाया गया है, जबकि



और दावे सामने आ रहे थे। इससे पहले रविवार को इरान की अर्ध-सैन्यीक समाचार एजेंसी मेहर न्यूज एजेंसी ने एक बिना तारीख वाला वीडियो जारी किया था। इसमें मोजतबा खामेनेई को अच्छी सेहत में दिखाई दिए थे।

सर्वोच्च नेता खामेनेई ने सेना में छह अहम पदों पर नियुक्तियां कीं : इस बीच, इरान के सर्वोच्च नेता और सशस्त्र बलों के कमांडर-इन-चीफ अयातुल्ला मोजतबा खामेनेई ने सेना के जनरल स्टाफ, इस्लामी रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्पस यानी आईआरजीसी और बसीज रेंजिस्टेंस फोर्स में छह वरिष्ठ कमांडरों को अहम पदों पर नियुक्त किया है। यह जानकारी एक आधिकारिक प्रेस विज्ञप्ति में दी गई है। खामेनेई ने अलग-अलग आदेश जारी कर इन नियुक्तियों की घोषणा की। अली अब्दोल्लाही को सशस्त्र बलों के चीफ ऑफ स्टॉफ बनाया गया है, जबकि

गौतम और सागर अदाणी के खिलाफ अमेरिकी कोर्ट में आपराधिक आरोप खारिज, फैसले पर क्या बोले उद्योगपति



न्यूयॉर्क, एजेंसी। अदाणी ग्रुप के अध्यक्ष गौतम अदाणी ने मंगलवार को अमेरिकी अदालत के आपराधिक आरोपों को खारिज करने के फैसले का स्वागत किया। उन्होंने न्यायिक प्रक्रिया के प्रति गहरा सम्मान व्यक्त किया। अदाणी ने एक्स पर पोस्ट कर कहा कि इस चुनौतीपूर्ण दौर में सत्य, निष्पक्षता और कानून के शासन में उनका विश्वास अटूट रहा। रॉयटर्स के अनुसार, सोमवार को न्यूयॉर्क के पूर्वी जिले के यूएस डिस्ट्रिक्ट कोर्ट के जज निकोलस गारौफिस ने गौतम और सागर अदाणी के खिलाफ आपराधिक आरोप खारिज कर दिए। जज का यह फैसला संघीय अभियोजकों को आरोप वापस लेने का अधिकार देने के बाद आया। उन्होंने अभियोजकों से इसके कारणों के बारे में पृष्ठताछ की थी। आरोपों को खारिज करते हुए जज ने कहा कि वह संतुष्ट हैं

विवयतनाम, मलेेशिया, बुनेई और ताइवान दशकों से विवादित जलक्षेत्र को लेकर आमने-सामने हैं। यह जलमार्ग वैश्विक व्यापार के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। बीजिंग लगभग पूरे दक्षिण चीन सागर पर अपना दावा बना रहे। हम एशिया को बेहद अहम क्षेत्र मानते हैं।

चीन की आलोचना से क्या परहेज : कोल्म्बी ने क्षेत्र में चीन की बढ़ती आक्रामकता को लेकर अमेरिका की ओर से आमतौर पर की जाने वाली तीखी आलोचना से परहेज किया। इसमें विवादित दक्षिण चीन सागर में चीन की गतिविधियां भी शामिल हैं। वाशिंगटन पिछले कुछ वर्षों में फिलीपींस के तटरक्षक और नौसैनिक बलों के खिलाफ बीजिंग की बढ़ती आक्रामक कार्रवाइयों पर बार-बार चिंता जताता रहा है। चीन और फिलीपींस के साथ-साथ



सेक्रेटरी एल्विज कोल्म्बी ने फिलीपींस में एक कार्यक्रम के दौरान यह टिप्पणी की। कोल्म्बी इन दिनों दक्षिण-पूर्व एशिया के दौर पर हैं और अपने पहले पड़ाव पर वह फिलीपींस पहुंचे हैं। इसके बाद वह इंडोनेशिया, थाईलैंड और कंबोडिया का दौरा करेंगे। कोल्म्बी ने यह भी दोहराया कि इरान युद्ध और मध्य पूर्व में मौजूदा अमेरिकी व्यस्तताओं के बावजूद वाशिंगटन एशिया से पीछे नहीं हट रहा है। कोल्म्बी ने विदेशी राजनयिकों, सैन्य अधिकारियों, कारोबारियों और पत्रकारों की मौजूदगी वाले कार्यक्रम में कहा,

ईरान-जर्मनी के विदेश मंत्रियों ने बातचीत; मोजतबा खामेनेई ने छह अहम पदों पर की नियुक्तियां



मकसद फारस की खाड़ी और होमुंज जलडमरूमध्य में क्षेत्रीय सुरक्षा और टिकाऊ विकास को मजबूत करना है।

इरान के सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई ‘पूरी तरह स्वस्थ’: राष्ट्रपति पेजेशकियन : उधर, इरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने दावा किया कि देश के सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई ‘पूरी तरह स्वस्थ’ हैं। उन्होंने उनकी शारीरिक स्थिति को लेकर लगाई जा रही अटकलों को खारिज किया। इरान की समाचार एजेंसी आईएसएनए की रिपोर्ट के अनुसार, राष्ट्रपति पेजेशकियन ने कहा कि जो व्यक्ति सात से आठ घंटे तक बैठकर चर्चा कर सकता है, उसे स्वास्थ्य संबंधी कोई समस्या नहीं हो सकती। उन्होंने यह भी बताया कि खामेनेई के साथ उनकी ‘बहुत अच्छी’ बैठक हुई थी। यह उच्च स्तर की मुलाकात ऐसे समय हुई है, जब मोजतबा खामेनेई की सेहत को लेकर लगातार खबरें

क्या विरोधियों से डरने लगे पुतिन, यूक्रेन युद्ध का विरोध करने वाली पार्टी क्यों नहीं लड़ पाएगी चुनाव

तेल अवीव, एजेंसी। क्या अगले संसदीय चुनाव को लेकर पुतिन डर रहे हैं दरअसल ये सवाल तब उठा जब आज रूस की सुप्रीम कोर्ट ने याब्लोको पार्टी को अगले महीने होने वाले संसदीय चुनाव से बाहर कर दिया। अदालत ने उसका चुनावी पंजीकरण रद्द कर दिया। क्योंकि याब्लोको रूस को उन राजनीतिक ताकतों में रही है जो सरकार की नीतियों की आलोचना करती रही हैं। पिछले कुछ वर्षों में यह यूक्रेन में रूसी सैन्य कार्रवाई का खुलकर विरोध करने वाली इक्लैट्री पंजीकृत विपक्षी पार्टी थी। पिछले महीने केंद्रीय चुनाव आयोग ने याब्लोको को 10 अन्य पार्टियों के साथ चुनाव लड़ने की अनुमति दी थी। लेकिन क्रेमलिन समर्थक मद्रलैंड पार्टी की अपील के बाद मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा और अदालत ने याब्लोको को चुनावी मैदान से बाहर कर दिया। याब्लोको ने अपने चुनावी अभियान में युद्धविराम, कूटनीति और शांति की बात को प्रमुखता दी थी। पार्टी ने परमाणु युद्ध रोकने और रूस को डर तथा राजनीतिक दमन से मुक्त बनाने जैसे मुद्दे भी उठाए। पार्टी के सह-संस्थापक और राजनीतिक समिति के

हम अकेले बोझ नहीं उठाएंगे’ : चीन के बढ़ते दबदबे का असर, क्या एशिया को भी बेसहारा छोड़ रहा अमेरिका

मनीला, एजेंसी। पेंटागन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने एशिया में अपने सहयोगी देशों से रक्षा क्षेत्र में अधिक निवेश करने की अपील की है। उन्होंने ये भी कहा कि अमेरिका अपने सहयोगी देशों के साथ साझेदार के रूप में काम करना चाहता है न कि संरक्षित देशों के रूप में। अमेरिकी अधिकारी के इस बड़े बयान के बाद कयास लगाए जा रहे हैं कि क्या यूरोप की तरह अब अमेरिका एशिया में भी अपनी मौजूदगी को सीमित करने पर विचार कर रहा है गौरतलब बात ये है कि ये बयान ऐसे समय सामने आया है, जब चीन एशिया में अपना दबदबा लगातार बढ़ा रहा है और उसका कई एशियाई देशों के साथ समुद्री सीमा को लेकर विवाद चल रहा है।

अमेरिकी अधिकारी ने फिलीपींस में की ये टिप्पणी : अमेरिकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन में अंडर

संक्षिप्त समाचार

सर्जनों को रिश्तत देने के मामले में भारतीय मूल के सीएफओ को जेल, आखिर क्या है पूरा मामला

वाॅशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की एक संघीय अदालत ने स्पाइनल इंफ़ांट कंपनी के भारतीय मूल के मुख्य वित्तीय अधिकारी को सर्जनों को रिश्तत देने के मामले में चार महीने जेल की सजा सुनाई है। दरअसल सीएफओ ने कंपनी के उत्पादों का इस्तेमाल करने के लिए सर्जनों को रिश्तत देने की कोशिश की। अधिकारियों ने बताया कि सर्जनों को यह रिश्तत फर्जी परामर्श शुल्क के रूप में दी गई थी। जेल की सजा पूरी करने के बाद कैम्ब्रिज निवासी 41 वर्षीय आदित्य हुमाड को एक साल तक निगरानी में रहना होगा और उन पर 9,500 अमेरिकी डॉलर का जुर्माना भी लगाया गया है। हुमाड ने एटी-किंकबैक कानून के उल्लंघन की साजिश रचने के आरोप में अपना अपराध स्वीकार कर लिया था। हुमाड पर सितंबर 2021 में स्पाइन फ़्रंटियर नामक कंपनी के संस्थापक, अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी किंग्सले आर. चिन के साथ आरोप लगाए गए थे। मैसाचुसेट्स जिले के अमेरिकी अर्टौनी कार्यालय ने सोमवार को जारी एक बयान में कहा कि हुमाड ने उन सर्जनों को 5,40,000 अमेरिकी डॉलर से अधिक की रिश्तत देने और दिलाने की साजिश रची। यह रकम ऐसे फर्जी परामर्श शुल्क के रूप में दी गई, जिनके लिए सर्जनों ने वास्तव में कोई काम नहीं किया था। अधिकारियों के अनुसार, हुमाड ने सर्जनों को कंपनी के उत्पादों का इस्तेमाल करने के लिए रिश्तत देने की साजिश रची। इसके बदले कंपनी को इन सर्जनों द्वारा की गई सर्जरी से लाखों डॉलर का राजस्व प्राप्त हुआ। अमेरिकी अर्टौनी लीह बी. फोले ने कहा कि हुमाड को जटिल रीढ़ की सर्जरी में चिकित्सकों को कंपनी के उत्पादों का इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से रिश्तत देने की साजिश रचने का दोषी ठहराया गया है और सजा सुनाई गई है।

तुर्किये में कुर्द लड़ाकों को मिलेगी सरशर्त माफ़ी, संसद से मिली मंजूरी ; **कानून कब कैसे लागू होगा**

अंकारा, एजेंसी। तुर्किये की संसद ने कुर्द लड़ाकों को सरशर्त माफ करने संबंधी विधेयक को मंजूरी दे दी है। ये कानून तभी लागू होगा जब तुर्किये के अधिकारी कुदिस्तान कर्कसी पार्टी (पीकेके) के पूरी तरह हथियार डालने की पुष्टि करेंगे। पीकेके ने पिछले साल अपनी दशकों पुरानी वशरास्त्र मुहिम खत्म करने और खुद को भंग करने की घोषणा की थी। यह निर्णय उसके जेल में बंद नेता अब्दुल्ला ओकलान के आह्वान पर लिया गया। यह कदम हजारों लोगों की जान लेने वाले संघर्ष को समाप्त करने की दिशा में है। इससे तुर्किये-इराक़ी संबंध मजबूत हो सकते हैं। यह सीरियाई सरकार के उन क्षेत्रों को एकीकृत करने के प्रयासों का भी समर्थन करेगा, जो कुर्द-नेतृत्व वाली सीरियन डेमोक्रेटिक फोर्सज के नियंत्रण में थे।

‘हम भी मांगेंगे हर्जाना’ : इरान की मुआवजे की मांग पर ट्रंप का नया दांव, बोले- अब हर बातचीत में होगा मुद्दा

वाॅशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इरान से उन लोगों के लिए मुआवजे की मांग की है, जो तेहरान से जुड़े संघर्षों में मारे गए या गंभीर रूप से घायल हुए। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच भविष्य में होने वाली किसी भी बातचीत में यह मुद्दा शामिल किया जाएगा। ट्रंप की यह मांग उस दावे के जवाब में आई है, जिसमें उन्होंने कहा कि इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ़ इरान के प्रतिनिधियों ने पांच महीने के सैन्य संघर्ष के दौरान इरान को हुए नुकसान के लिए मुआवजे की मांग की है। ट्रंप ने एक पोस्ट में इरान की इस मांग को ‘दिलचस्प विचार’ बताया। उन्होंने कहा कि वह भी तेहरान से इसी तरह की मांग कर रहे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा, ‘ मैं भी इरान से उन सभी लोगों के लिए मुआवजे की मांग कर रहा हूँ, जिन्हें उसने अपने सड़क किनारे बमों और कई संघर्षों में मारा और गंभीर रूप से घायल किया है, जिसके लिए वह मशहूर है।’ ट्रंप ने उन संघर्षों का भी जिक्र किया, जिनमें इरानी सैन्य कमांडर जनरल कासिम सुलेमानी शामिल थे। उन्होंने यूएसएस कोल पर मारे गए लोगों के परिवारों के लिए भी मुआवजे की मांग की। इसके अलावा उन्होंने युद्ध में मारे गए हजारों अन्य लोगों के परिवारों की मांग किया। ट्रंप ने पिछले पांच दशकों के दौरान इरान में प्रदर्शनों में मारे गए लोगों के परिवारों के लिए भी मुआवजे की मांग की। उन्होंने कहा, ‘ इसके अलावा, पिछले 50 वर्षों में इरान द्वारा मारे गए सैकड़ों हजारों निंदोष प्रदर्शनकारियों के परिवारों को भी मुआवजा दिया जाना चाहिए।’ ट्रंप ने यह भी दावा किया कि पिछले पांच महीनों में 52,000 लोग मारे गए हैं। हालांकि, अपनी पोस्ट में ट्रंप ने यह नहीं बताया कि मुआवजे की राशि कैसे तय की जाएगी।

रूस ने दिया भारत के साथ सीधे रेल मार्ग का प्रस्ताव, क्या हो सकता है रूट; किसे-कितना फायदा

मास्को, एजेंसी। रूस की तरफ से भारत को सीधा रेल रूट के जरिए जोड़ने पर चर्चाएं तेज हो गई हैं। हाल ही में रूस के उप-प्रधामंत्री मरत खुसनुलिन ने दोनों देशों के बीच एक संभावित रेल लिंक खड़ा करने पर गहराई से विचार की बात कही। उन्होंने इसके लिए विकल्प के तौर पर संभावित कुछ मार्ग भी सुझाए हैं।

मजेदार बात यह है कि रूस और भारत के बीच एक सीधा रेल मार्ग खड़ा करने की यह चर्चाएं कोई नई नहीं हैं। इससे पहले भी दोनों देश व्यापार के लिए रेल आधारित मार्ग बनाने पर बात कर चुके हैं। व्यापार का कुछ हिस्सा रेल मार्ग के जरिए आता-जाता भी है, हालांकि यह मार्ग फिलहाल सीमित है और दोनों देशों के अंदर तक ही स्थित है, न कि अंतर्देशीय है। ऐसे में यह जानना अहम है कि आखिर रूस की तरफ से भारत के साथ रेल मार्ग स्थापित करने के लिए हाल ही में क्या बयान दिया गया है मौजूदा समय में दोनों देशों के बीच व्यापार का क्या रूट है जिस नए रेल मार्ग की बात की जा रही है, उसका संभावित रूट क्या

हो सकता है इसकी जरूरत क्यों महसूस की जा रही है और इस मार्ग को लेकर चर्चाओं का इतिहास क्या रहा है आइये जानते हैं...

सबसे पहले राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने किया था एलान : रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पहले ही बाल्टिक और बेरेंट्स सागर से लेकर सीधे हिंद महासागर तक एक सीधे रेलवे कोरिडोर को स्थापित करने की विशाल बुनियादी ढांचा योजना की घोषणा कर चुके हैं। रूस के अधिकारियों के मुताबिक, घोषित प्रोजेक्ट का मकसद आधुनिक लॉजिस्टिक्स नेटवर्क तैयार करना है जो मिस्र के पास वाले रास्ते-स्वैज नहर की तुलना में शिपिंग समय को लगभग आधा कर देगा और माल ढुलाई के खर्च को काफी कम करेगा।

अब उप-प्रधानमंत्री ने भी दोहराई रेल मार्ग की बात : ताजा बयान रूस उप-प्रधानमंत्री मरत खुसनुलिन का है, जिन्होंने बीते हफ्ते भारत तक एक सीधे रेल मार्ग के प्रस्ताव को व्यावहारिक बताया और कहा है कि इस रेल लिंक की संभावनाओं



को तलाश जाना चाहिए। रूसी सरकार ने इस जमीन-आधारित रेल कोरिडोर के लिए एक संभावित मार्ग भी साझा किया है।

1. पारंपरिक समुद्री मार्गः स्वेज नहर का रास्ता : यह दोनों देशों के बीच व्यापार का सबसे स्थापित और पुराना समुद्री मार्ग है। इसमें मालवाहक जहाज रूस के सेंट पीटर्सबर्ग से निकल कर बोस्फोरस जलडमरूमध्य, भूथय सागर (मेडिटरेनियन सागर), स्वेज नहर और लाल सागर से होते हुए मुंबई या भारत के अन्य पश्चिमी बंदरगाहों तक पहुंचते हैं। इस मार्ग से सफर पूरा होने में सामान्यतः 40 से 45 दिन या कुछ परिस्थितियों में 45 से 60 दिन का समय लगता है।

2. इंटरनेशनल नॉर्थ-साइथ ट्रांसपोर्ट कोरिडोर (आईएनएसटीसी) : यह समुद्र,

रेल और सड़क मार्गों का एक संयुक्त मल्टीमॉडल नेटवर्क है। इसके तहत भारत के मुंबई से माल जहाजों द्वारा इरान के बंदर अब्बास या चाबहार बंदरगाह तक भेजा जाता है। वहां से इरान के रेल/सड़क मार्ग और कैस्पियन सागर के रास्ते माल को रूस के मॉस्को या सेंट पीटर्सबर्ग पहुंचाया जाता है।

चेन्नई-व्लादिवोस्तोक समुद्री गलियारा : यह मार्ग भारत के पूर्वी तट (खासकर चेन्नई) को रूस के सुदूर पूर्व में स्थित व्लादिवोस्तोक बंदरगाह से सीधे जोड़ता है। यह मार्ग स्वेज नहर के चक्करदार रास्ते को पूरी तरह बायपास करता है, जिससे समुद्री यात्रा का समय लगभग 18 से 20 दिन रह जाता है। जो कि पारंपरिक पश्चिमी मार्ग से लगभग 40 दिन का रहता है। हालांकि, इस मार्ग का

इस्तेमाल भी सीमित व्यापार के लिए ही होता है। फिलहाल इसे कागों परिवहन के लिए बेहतर बनाए जाने की कोशिशें जारी हैं, ताकि व्यापार को और बढ़ाया जा सके। रूस अपने नए ट्रांस-आर्कटिक ट्रांसपोर्ट कोरिडोर (टीएटीसी) के तहत इस आर्कटिक समुद्री मार्ग को तेजी से विकसित कर रहा है। भारत ने भी इस मार्ग में जबरदस्त रुचि दिखाई है। चेन्नई-व्लादिवोस्तोक समुद्री गलियारे को इस आर्कटिक मार्ग से जोड़कर भविष्य में रूस के उत्तरी क्षेत्रों से भारत के पूर्वी तटों तक कोयला, तेल, गैस और अन्य कच्चे माल की सुरक्षित और तेज आपूर्ति का नया नेटवर्क तैयार किया जा रहा है। रूसी उप-प्रधानमंत्री मरत खुसनुलिन की ओर से सुझाया गया मार्ग पूरी तरह से जमीन से रास्ते भारत को रूस से जोड़ेंगा। इसका संभावित भौगोलिक रूट रूस से तुर्कमेनिस्तान, इरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान के रास्ते भारत आ सकता है। हालांकि, पाकिस्तान के साथ भारत की दूरियों के मद्देनजर उसे बायपास करने पर विचार किया जा सकता है।

इसे अभिभावकों के अधिकार, धार्मिक और संवैधानिक अधिकार तथा विज्ञान की जीत बताया है।

विशेषज्ञों का बच्चों के संक्रमण का डर क्यों है : सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि टीकों के बीच ज्यादा अंतर रखने से बच्चों के संक्रमण की चपेट में आने का खतरा बढ़ सकता है। उनका तर्क है कि अगर किसी बच्चे को एक बीमारी से बचाने वाला टीका मिल गया, लेकिन दूसरे टीके के लिए अगली मुलाकात तक इंतजार करना पड़ा, तो वह उस दौरान ऐसी बीमारी से संक्रमित हो सकता है, जिससे टीका बचाव कर सकता है। बच्चों के टीकों और उन्हें किस उम्र में तथा किस संयोजन में देना है, इनका लंबे समय तक अध्ययन किया जाता है और इस्तेमाल के बाद भी उनकी सुरक्षा पर लगातार नजर रखी जाती है।

क्या ट्रंप ने वैक्सीन और ऑटिज्म को फिर जोड़ा : ट्रंप ने आदेश की घोषणा के दौरान वैक्सीन की संख्या और उन्हें देने के समय को अमेरिका में बढ़ रहे ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर से जोड़ने की बात कही। हालांकि, इनपुट के अनुसार वैज्ञानिक सहमति और दशकों के अध्ययनों ने वैक्सीन और ऑटिज्म के बीच किसी संबंध को खारिज किया है। अमेरिकन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स के अध्यक्ष डॉ. एंड्रयू रैसिन ने कहा कि इस फैसले से ऐसी स्थिति में अनिश्चितता, डर और भ्रम पैदा हो रहा है, जहां इसकी जरूरत नहीं है।

भूकंप में अब तक 132 मौतें, 570+ घायल, दुनियाभर से मदद; तबाही पर मैक्रों-रुबियो क्या बोले

बोगोटा, एजेंसी। दक्षिण अमेरिकी देश कोलंबिया में 7.4 तीव्रता के शक्तिशाली भूकंप ने कई इलाकों को हिलकाए रख दिया। भूकंप के बाद बड़े पैमाने पर राहत और बचाव अभियान चलाया जा रहा है। उपलब्ध जानकारी के मुताबिक कम से कम 132 लोगों की मौत हुई है, जबकि कई लोग मलबे के नीचे फंसे हुए हैं। पश्चिमी कोलंबिया में आए इस भूकंप का असर पड़ोसी देश इक्वाडोर में भी महसूस किया गया। हृदयसे के बाद स्थानीय स्तर पर बचाव दल प्रभावित इलाकों में लोगों की तलाश में जुटे हैं। भूकंप की तबाही के बाद कई देशों के नेताओं ने कोलंबिया के लोगों के प्रति संवेदना और समर्थन जताया है। फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों ने कहा कि मुश्किल की इस घड़ी में कोलंबिया फ्रांस की दोस्ती और मदद पर भरोसा कर सकता है। उन्होंने भूकंप में मारे गए लोगों, उनके परिवारों, घायलों और प्रभावित लोगों के प्रति संवेदना जताई। मैक्रों ने राहत और बचाव कार्य में जुटे लोगों की भी सराहना की।

यूक्रेन और इटली ने किस तरह जटायई एकजुटता : यूक्रेन की राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेन्स्की ने भी कोलंबिया के लोगों के साथ एकजुटता जताई। उन्होंने कहा कि पश्चिमी कोलंबिया में आए भूकंप की खबर बेहद दुःखद है और इसका असर पड़ोसी इक्वाडोर पर भी पड़ा है। उन्होंने मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति संवेदना जताते हुए दुनिया के सक्षम देशों से प्रभावित लोगों और देशों की मदद के लिए आगे आने की अपील की। इटली की प्रधानमंत्री जोर्जिया मेलोनी ने भी कहा कि वह कोलंबिया में आए भीषण भूकंप से जुड़ी खबरों पर नजर रख रही हैं और इटली प्रभावित परिवारों तथा बचाव कार्य में जुटे लोगों के साथ खड़ा है।

इक्वाडोर ने कोलंबिया को